डुगर सिंह, सातवीं, भाड़खा, बाड़मेर, राजस्थान

पूर्वा वशिष्ठ, चौथी, भोपाल, म.प्र.

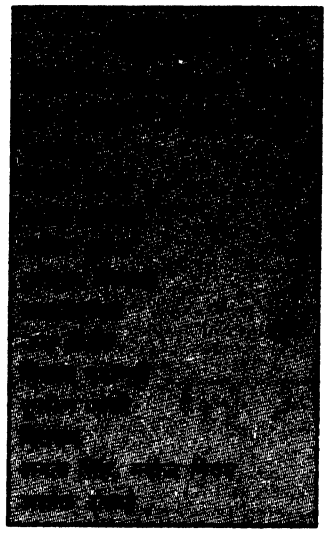

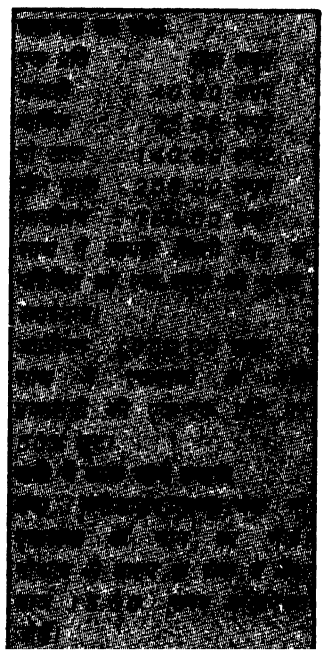

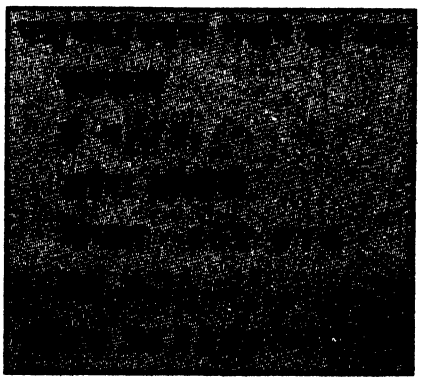

रूबी आर्य, भिण्ड, (म.प्र.)

मेरा पन्ना अंक में

विशेष

- **चित्र** - रूबी आर्य, बालकिशन, नरेश तलरेजा, कृष्ण कुमार साहू, जसोदा कुशवाहा, सीमा राजपूत, सुरेश, आशा कुल्हरी, मनाली राजपाल, अमित मालवीय, सुनयना सिंह, कमल, सतीष चौहान।
- **कविताएँ** - शुभम श्रीवास्तव, शिवरामकृष्ण वाघ, अभिषेक सोलंकी।
- **कहानियाँ** - मनोज द्विवेदी, लुकेश वर्मा, सीमा राजपूत, आशा कटयारे, सोहित अग्रवाल, संदीप, देवेन्द्र कोठारी, मघादास स्वामी, कमलदीप सिंह, धुनेश्वर शोरी।

और इनके अलावा

4 पाठक लिखते हैं

8 गोबर खाऊँ गबर-गबर

13 भूली बिसरी यादें : 9 - नील विद्रोह

कहानी

27 सफेद दाढ़ीवाला बकरा

कविताएँ

2 पानी बरसा

12 रामदीन रिक्शावाला

20 बूँदों का है कमाल

हर बार की तरह

22 खेल कागज़ का : चिड़ियें

26 वर्ग पहेली

38 माथापच्ची

और यह भी

32 आई आई बारिश

40 दादा पोतों का खेल

आवरण चित्र : गोबर के गोले को धकेलता हुआ एक गुबरैला। चित्र 'ए चाइल्ड्स फ़र्स्ट लायब्रेरी ऑफ़ लर्निंग : एनिमल्स इन एक्शन' से साभार।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात..

पानी ब

हवा तेज़ बह चली सरासर
धीरे बहना झूल के
उड़े बगूले धूल के।
ज़ोर-ज़ोर से लगे डोलने पेड़
हवा से बोलने
उड़ी धूप छायाएँ लेकर
दसों दिशाएँ खोलने
जो भी निकला बाहर उसको
लगे थपेड़े फूल के।

टन्-टन् टन्-टन् घण्टी बाजे
मोटे खुले स्कूल के
खाली झूले रहे झूलते
बच्चे भाग गए झूल के।

□

नवीन सागर

चित्र : विप्लव शशि

बालकिशन, आठवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

नरेश तलरेजा, बारह वर्ष, हरदा, म. प्र.

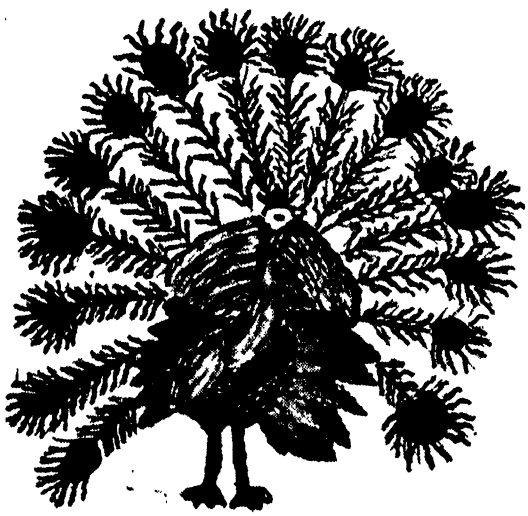

कृष्णकुमार साहू, रमतला, बिलासपुर, म. प्र.

यहाँ से काटें

चकमक

सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर माह ..... से चकमक भेजना शुरू करें–

नाम .....

मोहल्ला .....

डाकघर .....

ज़िला .....

पिन

सदस्यता शुल्क रु. .... माह/वर्ष के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

सदस्यता दरें

छह माह	:	40.00 रुपए
एक साल	:	75.00 रुपए
दो साल	:	140.00 रुपए
तीन साल	:	200.00 रुपए
आजीवन	:	750.00 रुपए *
आजीवन	:	1000.00 रुपए ०

* इस सदस्यता पर आपके किसी मित्र को साल भर चकमक का उपहार

० इस सदस्यता पर एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक प्रति पर 50% की छूट

सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से **'एकलव्य'** के नाम में इस पते पर भेजें –

एकलव्य, ई–1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (म. प्र.)

भोपाल से बाहर के चेक से शुल्क भेजते समय कृपया 15.00 रुपए बैंक चार्ज अतिरिक्त जोड़ें।

देवेन्द्र लश्करी, दूसरी, धार, म. प्र.

चकमक का उपहार

अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम

मोहल्ला

डाकघर

ज़िला

पिन

[redacted]

मुझे चकमक बहुत पसन्द है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। एक बार यहाँ एक बस आई थी। उसमें बहुत सारी किताबें थीं। उसके चारों ओर बहुत भीड़ थी। मैंने एक चकमक खरीदी। तभी से मैं चकमक में कहानियाँ लिखकर भेजती हूँ। मेरे पास वापस एक चकमक आती है। और यह चकमक मध्यप्रदेश से आती है। तथा मैं छतरगढ़ (राजस्थान) में रहती हूँ। लेकिन चकमक लेट बहुत आती है। छह महीने में एक चकमक आती है। लेकिन आप कई कहानियाँ छापते हैं, कई नहीं, ऐसा क्यों? वो बस एक बार आई, वापस कभी आई ही नहीं, ऐसा क्यों? मुझे चकमक बहुत पसन्द है, आप इस बात पर गौर करें। और मेरे पास चार चकमक आई है। और लिफाफे पर दीप्ति चौरे नहीं, दीप्ति चौधरी लिखें।

■ दीप्ति चौधरी, छतरगढ़, राजस्थान

मैं जुलाई 1997 से ही चकमक का नियमित पाठक हूँ। यह पत्रिका मेरी व मेरे केन्द्र के बालकों की अत्यन्त प्रिय पत्रिका है। चकमक को आप जिस सूझ-बूझ से सजा-संवार रहे हैं, वह अत्यंत प्रशंसनीय है। चकमक में प्रकाशित रचनाएँ बच्चों के लिए वरदान हैं।

मेरा एक सुझाव है कि चकमक में सभी प्रकार की रोचक जानकारी दी जाती है। किन्तु यदि इसमें सामान्य ज्ञान, ऐतिहासिक पौराणिक प्रेरणास्पद कहानियों का प्रकाशन किया जाए तो बालकों में पत्रिका एक सशक्त प्रेरक का दायित्व भी बखूबी निभा सकती है। और अंत में मेरी यह शुभकामनाएँ हैं कि चकमक उत्तरोत्तर प्रगति व लोकप्रियता के साथ नन्हे-मुन्नों का स्वस्थ मनोरंजन व मार्गदर्शन करेगी।

■ भैरुलाल मेघवाल, अनुदेशक, लोक जुम्बिश परिषद, छोटी तीरथ, बून्दी, राजस्थान

मेरा नाम स्नेहा बत्रा है। मैं चौथी कक्षा में पढ़ती हूँ और मैं नौ साल की हूँ। मैं आपकी पत्रिका 'चकमक' की नियमित पाठक हूँ। चकमक मई 1997 से बराबर आ रही है, मगर देर से। जैसे अभी मई 1998 आने वाली है और मुझे अभी दो दिन पहले फ़रवरी 1998 की चकमक मिली है। कृपया चकमक को इस बार से जल्दी भेजने की चेष्टा करें।

■ स्नेहा बत्रा, हार्बर रोड, कलकत्ता

मेरा पन्ना

मेरा दोस्त

एक बार की बात है मैं और मेरा दोस्त मेला जा रहे थे। हमारे घर से मेला करीबन 3 किलोमीटर है। मेले को जो रास्ता जाता है वह बहुत ही ऊबड़-खाबड़ है। मेरी जेब में 20 रुपए थे। जबकि मेरे दोस्त की जेब में 25 रुपए थे। मुझे चलते-चलते थोड़ा गुस्सा आ गया। मुझे गुस्सा इसलिए आया कि मेरी जेब में केवल 20 रुपए हैं जबकि दोस्त की जेब में 25 रुपए। मैंने अपने दोस्त (ध्रुव) से कहा, "5 रुपया मुझे दे दो नहीं तो मैं तुम्हें बहुत पीटूँगा।"

उसने कहा, "मैं नहीं दूँगा। अगर जबरदस्ती की तो मैं तुम्हें पीटूँगा।"

मैं उससे भिड़ गया। मेरे दोस्त ने मुझे बहुत पीटा। फिर वह मेला चला गया और बाद में मैं भी मेला गया। लेकिन मैं बहुत गुस्से में था। मैंने सोचा उसे सबक सिखाऊँगा। फिर मैंने मेले में पहले एक गेंद खरीदी। बाद में मैंने दो गन्ने लिए, फिर जलेबी खाई। एक छोटी-सी खेलने के लिए बन्दूक ली। इस तरह मेरे पैसे ख़त्म हो गए और मुझे ध्यान नहीं रहा। मेरी जेब में केवल 2 रुपए थे और मैंने खूब मिठाई खाई और फिर मैं चल दिया तो बनिया ने कहा, "पैसे दो।"

तो मैंने उसे 2 रुपए दे दिए तो वह बोला, "बाकी के 8 रुपए?"

तो मैंने कहा, "मेरे पास पैसे नहीं हैं।"

तो बनिया ने कहा, "अब मैं तुम्हें पीटूँगा, नहीं तो पैसे दो।" मैं रोने लगा। तभी मेरे दोस्त (ध्रुव) ने बनिया के पास आकर उसे 8 रुपए दे दिए। हम दोनों साथ-साथ घर गए। फिर पापा को सारी बात बताई तो पापा पहले हँसे फिर उन्होंने कहा, "तुम दोनों एक अच्छे दोस्त हो।" फिर हम दोनों और अच्छे दोस्त बन गए।

जसोदा कुशवाहा, आठवीं, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.

मनोज कुमार द्विवेदी, नौवीं, पुरौना, रीवा, म. प्र.

मेरा पन्ना

हमारी सैर

आज रविवार का दिन था। आज हमारे गाँव में भी सभी सुबह से ही वोट डालने जा रहे थे। हम भी सुबह से ही नहा-खाकर घर से स्कूल की तरफ निकले। रास्ते में रमेश, अमित और कुबेर भी मिल गए। हम चारों स्कूल पहुँचे तो सुबह आठ बजे ही पुरुषों और महिलाओं की बहुत लंबी-लंबी लाइनें लगी हुई थीं। हम भी स्कूल के अन्दर जाना चाहते थे, लेकिन गेट पर खड़े पुलिस ने हमें बाहर से ही भगा दिया। हम वहीं पर खेलते रहे। खेलते-खेलते हमने खेत घूमने की सोची।

हम सभी पगडंडी से उछलते-कूदते खेत की तरफ बढ़ रहे थे। हमें बहुत मज़ा आ रहा था। पेड़ों की ठंडी-ठंडी हवा और खेतों के दृश्य देखकर हमारा मन खुश हो गया। रास्ते में एक नन्हा सा साँप जा रहा था। हमने साँप को कुछ नहीं किया तो साँप ने हमें भी कुछ नहीं किया। साँप रास्ता छोड़कर खेतों की तरफ बिलों में चला गया और हम खेत की तरफ चल दिए।

किसी के खेत में गन्ना लगा था तो किसी के खेत में मटर। कहीं गेहूँ लगा था तो कहीं पर धान। लेकिन हमारे खेत में तो चना लगा था। सभी के खेतों को रखवाला खेत में बैठकर रखवाली कर रहा था। बहुत देर में हम हमारे खेत पर पहुँचे। सबको बहुत भूख लग रही थी क्योंकि दोपहर हो चुकी थी। हमने अपने खेत से थोड़े से चने उखाड़े। और हम चारों ने थोड़े-थोड़े बाँट लिए।

हम सभी नीम के पेड़ के नीचे बैठे थे। हमने वहाँ से हटकर चने को नाले के पानी में धोया क्योंकि चने के पेड़ को बिना धोए खाने से चना खट्टा लगता है। नाले में थोड़ा-थोड़ा पानी भरा था। वहीं रखे हुये पत्थर पर बैठकर हाथ-पैर धोए और चना खाने बैठ गए। चना खाकर हम इधर उधर देखने लगे। पक्षियों की अलग-अलग आवाज़ें सुनाई दीं।

आवाज़ें सुनकर हमने अनेक तरह के पक्षियों को पेड़ पर बैठे और उड़ते देखा तो हमें भी उड़ने का मन हो गया। लेकिन फिर ख्याल आया कि हमें तो घर भी जाना है। यहाँ छाया में बैठे-बैठे हमें समय का ख्याल ही नहीं रहा। हम बैठे-बैठे अन्य जीव-जन्तुओं की बातें कर रहे थे। फिर हम वहाँ से जल्दी-जल्दी घर बातें करते आए। रास्ते में स्कूल पर तो भीड़ ही नहीं थी। हमने पूछा तो एक आदमी ने बताया कि सभी वोट डाल चुके हैं, कुछ को छोड़कर। तो हम जल्दी से घर पहुँचे तो देखा कि दो बज गये हैं। घर पहुँचने पर सभी हमारे लिए परेशान थे और हमें बिना बताए घर से बाहर जाने के लिये मार पड़ी।

लुकेश वर्मा, सातवीं, टोर, बरबंदा, रायपुर, म.प्र.

बूझो पहेलियाँ

दो कान हैं मेरे लेकिन
सुनने में असमर्थ सदा
खाती हूँ तर माल हमेशा
मिले भले ही यदा-कदा

मेरे लिए झगड़ते हैं सब
मैं सबकी मेहमान
पैर चार होकर अपंग हूँ
फिर भी है सम्मान

एक लड़की हरी लाल पीली
खड़ी शहर के चौराहे पर
आते जाते लोगों को वह
राह दिखाती इशारे पर

नितिन खरे, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.

मेरा पन्ना

दिन और रात

दिन है आता
सूरज लाता
साथ ही हमें जगाता
रात है आती
चन्द्रमा लाती
साथ ही हमें सुलाती
दोनों के हैं काम अलग
दोनों के हैं धाम अलग
धरती करती दोनों के काम
न करती एक पल आराम
नौ ग्रह सूरज के दासी
नौ ग्रह में धरती में हैं वासी और जीवन
जिसे हमें बनाना है सबसे प्यारा
दिन है आता
रात है आती
यह दोनों ही दुनिया को सुन्दर बनाते

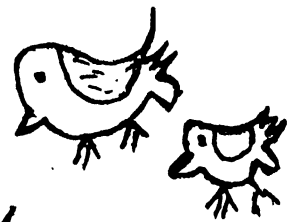

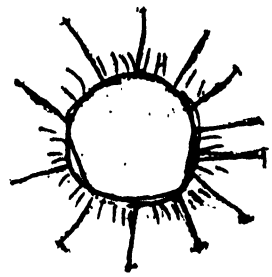

शुभम श्रीवास्तव, तीसरी, कोरबा,
बिलासपुर, म. प्र.

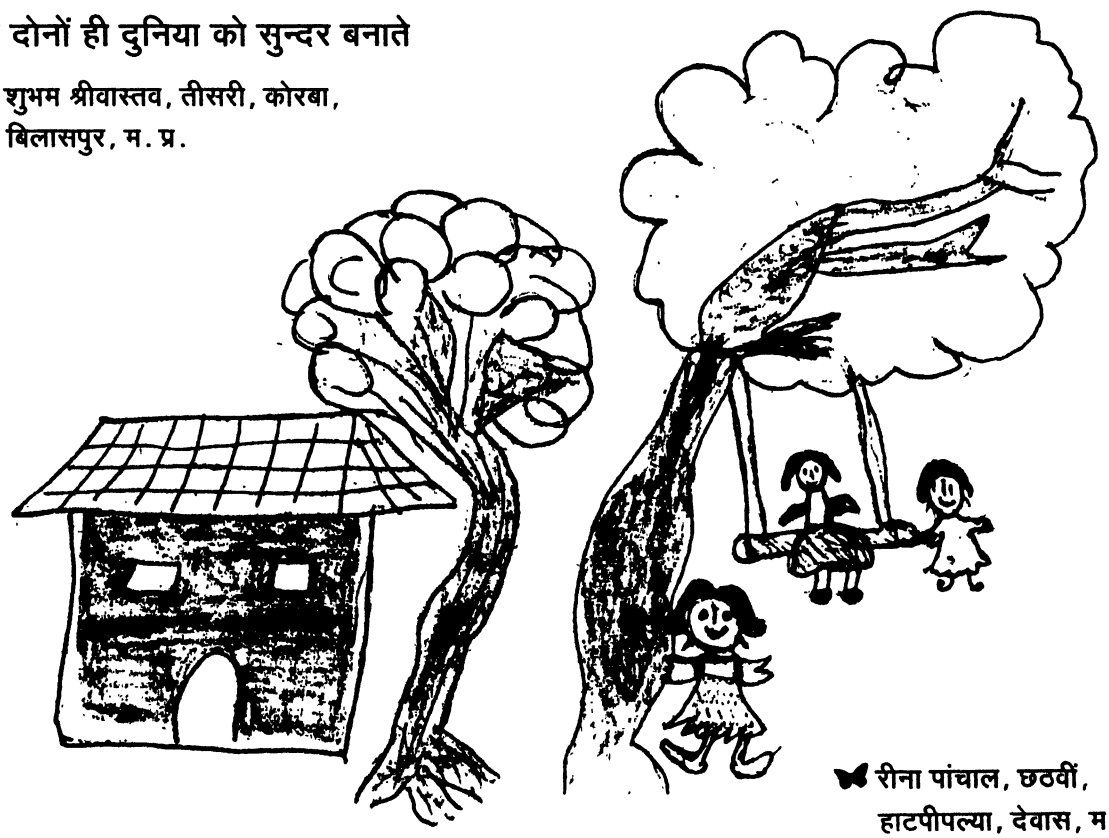

रीना पांचाल, छठवीं,
हाटपीपल्या, देवास, म. प्र.

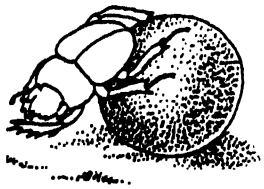

गोबर खाऊँ गबर–गबर

मेरा नाम है गुबरैला। मैं एक प्रकार का कीड़ा हूँ। तुम तो जानते ही हो कीड़ों की आबादी कितनी ज़्यादा है। अनगिनत जातियाँ भी हैं। शायद जिन कीड़ों को तुम जानते पहचानते हो उन्हीं की संख्या हज़ारों-लाखों में होगी। और जिन्हें तुम नहीं पहचानते उनकी तो बात ही क्या कहें।

इसी बहुत बड़े कीट वर्ग का एक हिस्सा है 'बीटल' या गुबरैला का। मैं इसी हिस्से का एक सदस्य हूँ। हमारे इस परिवार का वैज्ञानिक नाम है कोलीओप्टेरा, जिसका अर्थ होता है ढँके परों वाला। हमारे दो जोड़ी पर होते हैं जिनमें से अगले दो पर कड़े और मोटे होते हैं। ये कड़े पर मेरे कोमल अंगों को ढँककर रखते हैं।

एक ख़ास तरह का बीटल है जिसके खाने में गोबर मुख्य रूप से शामिल होता है। मैं वही हूँ। हममें से भी अलग-अलग जानवरों के गोबर खाने वाले अलग-अलग तरह के गुबरैले होते हैं। अंग्रेज़ी में हमें डंग-बीटल कहा जाता है क्योंकि अंग्रेज़ी में गोबर को डंग कहते हैं।

बहुत पहले साहित्य में मेरा ज़िक्र होता रहा है। चौदहवीं-पन्द्रहवीं शताब्दी के यूनानी साहित्य में मेरा नाम आता है। और अलावा इसके विभिन्न तरह के ज़ेवरों में, मूर्तियों में हमारी तरह के रंगों और डिज़ाइनों का उपयोग किया जाता रहा है।

तुम्हें यह बात सुनकर थोड़ा अजीब भी लगेगा और शायद थोड़ा मज़ा भी आएगा कि हमने आपस में ही अलग-अलग जानवरों की लीद पर गुज़र-बसर करने को बहुत अच्छी तरह से बाँट लिया है। जैसे कुछ गुबरैले गाय के गोबर से अपना भोजन जुटाते हैं तो कुछ गुबरैले हाथी की लीद से ही भोजन करना पसन्द करते हैं। इसके अलावा कुछ ऐसे गुबरैले भी होते हैं जो किसी भी तरह के गोबर से काम चला लेते हैं।

तुम सोच रहे होगे कि गोबर या लीद पर गुज़र-बसर का क्या मतलब हुआ? तो अब सुनो एक और मज़ेदार बात। जैसे ही कोई जानवर जैसे मान लो गाय ही, गोबर करती है, हम वहाँ

माला में लगे लटकनों में गुबरैलों की डिज़ाइन का इस्तेमाल किया गया है।

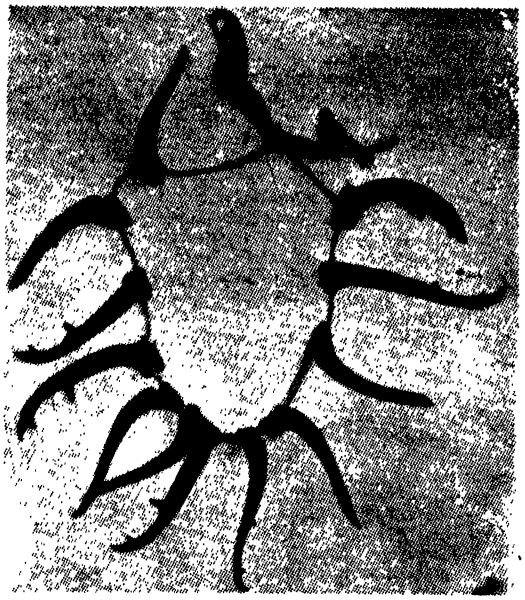

गुबरैलों के सींगों से बनी माला।

पहुँचकर गोबर के गोले बनाना शुरू कर देते हैं। ये गोले हम लुढ़काकर ले जाते हैं और अपने बिल में सहेजकर रखते हैं। अरे भई, यह हमारा खाना होता है। इसके अलावा कभी-कभार हम पत्तियाँ, फूलों का रस आदि भी खाते हैं। हम जो गोले बनाते हैं उन्हें दो तरह से इस्तेमाल करते हैं। एक अपने खाने के लिए, दूसरा अण्डे सेने के लिए। बनाए हुए कुछ गोलों में मादा अण्डा देती है। अण्डों के फूटने पर लार्वा के खाने के लिए सबसे पहला भोजन यही गोबर का गोला होता है।

सामान्य तौर पर तो हम आगे की ओर ही चलते हैं। लेकिन हमें उल्टा यानी पीछे की ओर चलने का भी अच्छा अभ्यास होता है। गोबर के गोले बनाने के बाद उनको अपने पिछले पैरों से, उल्टे होकर लुढ़काते हुए ही हम अपने घर तक ले जाते हैं।

मैं ज़मीन पर रहता हूँ। खाना और अण्डों के लिए ज़मीन के नीचे बिल बनाता हूँ। आमतौर पर हम गहरे रंगों के होते हैं। हम आकार में छोटे लगभग गोल-से होते हैं। मैं अपने वज़न से कई गुना ज़्यादा खाना 24 घण्टे में खा जाता हूँ। मैं बेकार पदार्थों को खाकर खाद में बदलता हूँ। साथ ही ज़मीन में बिल बनाकर हम उसकी हवादारी भी करते रहते हैं।

गर्मी की शुरूआत में हम गोले बनाना शुरू कर देते हैं। इन्हें इकट्ठा करते जाते हैं और गर्मी के ख़त्म होने से पहले मादा अण्डे देती है। हम जो गोले बनाकर अपना खाना सहेजते हैं, कभी-कभी वे गोले सेब के बराबर तक भी होते हैं। हमारे इस गोले बनाने और उन्हें लुढ़काकर ले जाने से जुड़ी कई मज़ेदार बातें हैं। जैसे – यूनान की एक पुरानी किंवदन्ती के अनुसार यह माना जाता है कि मैं सूर्य हूँ और वह गोला जिसे मैं लुढ़का रहा हूँ पृथ्वी है।

खैर कही-सुनी जाने वाली बातें छोड़ो, मेरे नाम पर एक नाच भी होता है। ब्राज़ील देश में एक जगह एक मुखौटा नृत्य होता है जिसे डंग बीटल डाँस कहा जाता है। इस नाच में दो लोग एक दूसरे का हाथ पकड़कर मुखौटा लगाकर नाचते हैं। नाचते हुए ये लोग पैरों को आगे-पीछे और आजू-बाजू ले जाते हैं। नाच की ये गति (मूवमेंट) बिल्कुल उसी तरह की होती है जिस तरह मैं गोबर से गोला बनाते हुए करता हूँ।

मेरे कारनामे तुम या तो मुझे देखकर समझ सकते हो या फिर अगले पन्नों पर हमारे चित्र देखकर समझ सकते हो।

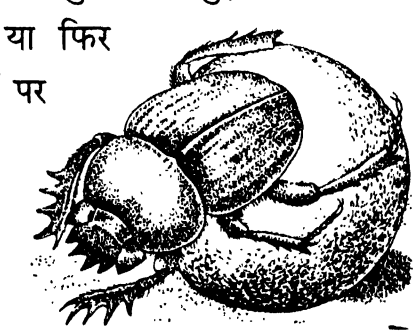

आ हा! गोबर की खुशबू आई,
सबने दौड़ लगाई।

गाय के गोबर के ताज़ा और नरम-नरम रहते ही मैं फौरन पहुँचकर खाना बटोरने में लग जाता हूँ।

जितना ज़्यादा-से-ज़्यादा गोबर घेर सकता हूँ घेर लेता हूँ।

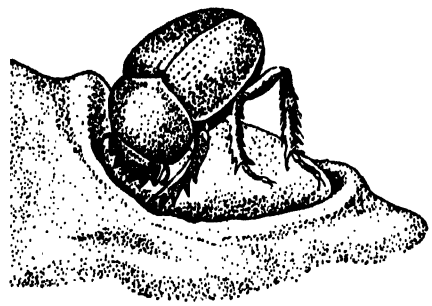

उसके आगे-पीछे, ऊपर-नीचे घूम-घूमकर, अगले-पिछले दोनों पैरों से गोला बनाता हूँ। बिल्कुल ठीक गोला बनना ज़रूरी है वरना उसे लुढ़काकर कैसे ले जाऊँगा।

देखो कितनी बड़ी गेंद बना ली गोबर की। है न मुझसे बड़ी।

इस लेख के चित्र 'ए चाइल्ड्स फ़र्स्ट लायब्रेरी ऑफ़ लर्निंग: एनिमल्स इन एक्शन' तथा 'बीटल्स' से साभार।

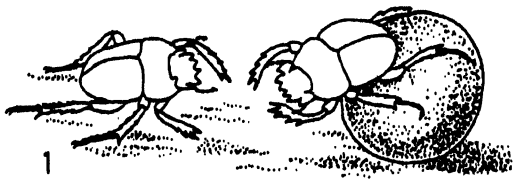

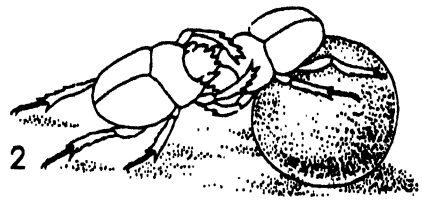

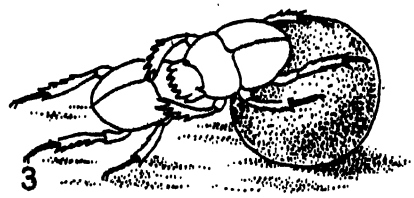

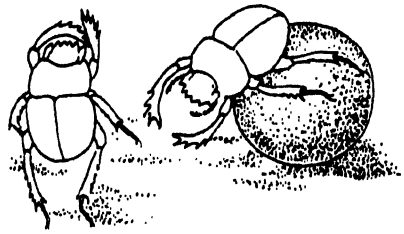

'अरे, अरे! गेंद मैंने बनाई है तुम कहाँ से आ गए?' दो गुबरैले आपस में लड़ते हुए।

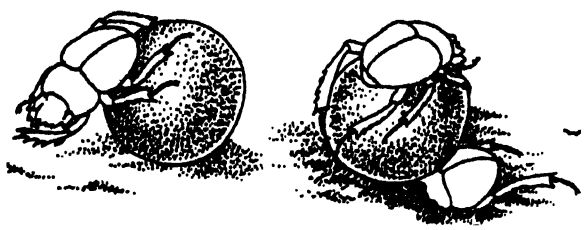

नर और मादा मिलकर गेंद को छुपाने की फ़िक्र में हैं। इस गेंद में अण्डा जो दिया है।

मादा गेंद को ढकेलती ला रही है। और नर गड्ढा खोद रहा है।

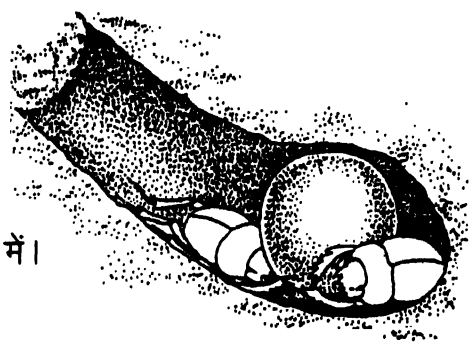

और यह पहुँच गया गोला गड्ढे में।

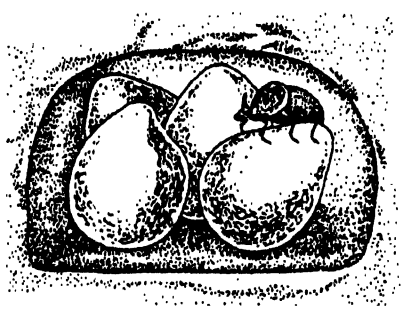

जिन गोबर की गेंदों में मादा अण्डे देती है, उन्हें कहीं सुरक्षित जगह पर रखकर उनकी निगरानी करती है।

गोबर की गेंद के अन्दर रखा अण्डा।
यह एक गोबर के गोले की खड़ी काट है।

रामदीन रिक्शा वाला

कंधे पर एक गमछा डाले
मस्ती की धुन में कुछ गाता,
हटो-हटो जी, रस्ता दो-
ज़ोरों से घण्टी खड़काता।
आगे-आगे बढ़ता आता
रामदीन रिक्शा वाला।

बस अड्डा, स्टेशन या फिर
बड़ा चौक, जौहरी बाज़ार,
सब रस्ते इसके पहचाने
हरदम चलने को तैयार।
सबको मंज़िल तक पहुँचाता
रामदीन रिक्शा वाला।

नन्हे-मुन्ने प्यारे बच्चों
को ले जाता जब स्कूल,
उनकी मीठी-मीठी बातों
में अपने दुख जाता भूल।
रोचक किस्से खूब सुनाता
रामदीन रिक्शा वाला।

इन सड़कों पर जीवन बीता
सड़कों से है गहरा नाता,
धरती का है प्यारा बेटा
धरती इसकी प्यारी माता।
मेहनत से है कब कतराता,
रामदीन रिक्शा वाला।

❑ प्रकाश मनु

फोटो : यू. बी. एस. पब्लिशर्स की 'बनारस' से साभार।

नील विद्रोह

अठारहवीं सदी के अंत में और उन्नीसवीं सदी के शुरू में नील की खेती अंग्रेज़ पूंजीपतियों की लूट का एक मुख्य साधन थी। अंग्रेज़ भारत से नील ले जाकर दूसरे देशों में बहुत दिनों से बेचते चले आ रहे थे। लेकिन उसकी खेती में पैसा लगाने की शुरुआत अठारहवीं सदी के अंत में हुई। लुई वन्नो नाम के एक फ्रांसीसी ने सबसे पहले 1777 में नील की खेती शुरू की। कैरेल ब्लूम नाम के अंग्रेज़ ने 1778 में नील की कोठी खोली और ईस्ट इंडिया कम्पनी को सूचित किया कि खेती बड़े मुनाफे का साधन बन सकती है। उसने गवर्नर जनरल को भी स्मृति पत्र देकर बड़े पैमाने पर इसकी खेती कराने का अनुरोध किया।

अठारहवीं सदी के अन्त में ब्रिटेन में ओद्यौगिक क्रान्ति के असर दिखने लगे थे। इसके बाद फैक्ट्रियों में बनने वाले कपड़ों में देने के लिए नील की माँग बहुत बढ़ गई। इसके अलावा भारतीय नील फ्रांस, इटली, ऑस्ट्रिया, अमेरिका, मिस्र, फारस आदि देशों में भी जाता था। इसलिए नील के व्यापार से अपार मुनाफा होता देखकर कम्पनी ने कई अंग्रेज़ों को नील की खेती करने के लिए प्रेरित किया। इस तरह कई अंग्रेज़ निलहे साहब बन गए। इन निलहे साहबों ने अपने शोषण और अत्याचार का खूब आतंक मचाया। निलहे साहबों को जितने भी कर्ज़ की ज़रूरत होती कम्पनी कम सूद पर देती। जितना भी नील तैयार होता था कम्पनी खरीद लेती थी। बंगाल से वह सवा रुपया प्रति पौण्ड नील खरीदती और इंग्लैंड में पाँच से सात रुपए प्रति पौण्ड बेचती थी। इससे नील से होने वाले लाभ का अनुमान लगाया जा सकता है।

ये निलहे साहब थोड़ी ज़मीन में स्वयं नील की खेती करते, लेकिन ज़्यादातर वे अग्रिम रकम देकर दूसरे किसानों को अपनी ज़मीन में नील की खेती करने को बाध्य करते थे। एक बार जो उनसे अग्रिम पैसा ले लेता उसे सारी ज़िन्दगी मुक्ति नहीं मिलती थी। इस तरह किसानों के एक बड़े हिस्से को गुलाम बना दिया गया। नील विद्रोह के नायक नील की खेती करने वाले किसान थे। जिन्होंने निलहे साहबों के अत्याचार से दुखी होकर बगावत कर दी थी।

अंग्रेज़ों के साथ-साथ बंगाल के अंग्रेज़परस्त ज़मींदारों को भी नील की खेती और व्यापार में बहुत लाभ दिखाई दिया। इसलिए उन्होंने कहा कि अंग्रेज़ भारत में आकर बसें और पूँजी लगाएँ। लेकिन बंगाल के ही ज़मींदारों का एक दूसरा दल भी था जो यह समझता था कि अंग्रेज़ों को ज़मींदारियाँ ख़रीदने का अधिकार दे दिया गया तो किसानों के साथ-साथ ज़मींदारों का भी बुरा होगा। इस दल ने एक विरोध पत्र ब्रिटिश सरकार को भेजा था।

अंग्रेज़ जानते थे कि भारत में अपना राज्य मज़बूत करने के लिए अंग्रेज़ों को यहाँ बसाना और इस तरह यहाँ का सारा धन अपने कब्ज़े में रखना ज़रूरी है। उस समय के गवर्नर जरनल बेंटिंक ने भी यूरोपीय लोगों को भारत में बसाने का समर्थन करते हुए अपनी तरफ से कम्पनी को पत्र लिखा। 1833 में ब्रिटेन की सरकार ने भारत की ज़मीन पर ईस्ट इंडिया कम्पनी का एकाधिकार ख़त्म करके किसी भी अंग्रेज़ को भारत में बसने का अधिकार दे दिया।

अंग्रेज़ों ने बड़ी-बड़ी ज़मींदारियाँ ख़रीद लीं और नील की खेती करना शुरू कर दी। निलहे साहब किसानों को अपनी कोठियों पर बुलवाते और ज़बरदस्ती नील की खेती करने का इकरारनामा लिखवाते थे। नील की खेती के लिए दो रुपया प्रति बीघा अग्रिम दिया जाता था। कोठी के कर्मचारी किसान की अच्छी से अच्छी ज़मीन पर निशान लगा देते थे। इस ज़मीन में किसान को नील ही बोना पड़ता था। उस फसल की देख-रेख करना किसान का ही काम होता। जब पौधे तैयार हो जाते तब उन्हें काटकर कोठी में पहुँचा देता। कोठी में हर बोझ या गट्ठर को तोला जाता। एक रुपए के 4, 6 या 8 बोझ के हिसाब से किसान का पावना (यानि जितना पैसा दिया जाना है) दर्ज़ कर लिया जाता। हर बीघे में 8 से 10 बोझ तक नील पैदा होता।

नील का मौसम आने पर किसान के पावनों का हिसाब-किताब होता। अग्रिम दो रुपए तो काट ही लिए जाते साथ ही किसान से बीज का 4 से 8 आने तक वसूल किया जाता। स्टैम्प की बाबत 2 आने से 8 आने तक लिए जाते, चाहे वह लगे या न लगे। गाड़ी का भाड़ा 4 आने से 12 आने तक काट लिया जाता। नतीजा यह होता कि हिसाब-किताब करने पर किसान को कुछ भी नहीं मिलता, उल्टे उस पर कर्ज़ हो जाता। इसके बाद जो पेशगी दी जाती उस में से कर्ज़ काटकर नाम मात्र को कुछ पैसा किसान को मिल पाता था।

इस तरह जो किसान एक बार इकरारनामे पर पेशगी रकम ले लेता वह ज़िन्दगी भर छूट नहीं पाता। कर्ज़ दिन पर दिन बढ़ता जाता था और दूसरी फसल वह लगा नहीं सकता था। इकरारनामे के ख़िलाफ़ जाने पर किसानों की सम्पत्ति छीन लेने और उसे कैद करने का अधिकार निलहे साहबों को था।

इस तरह निलहे साहबों ने किसानों को उनकी अपनी ज़मीन पर ही गुलाम बना दिया था। सरकारी कानून कायदे भी किसानों के ख़िलाफ़ थे। जो कानून किसानों के पक्ष में थे, गोरे साहब उनकी परवाह ही नहीं करते थे। पुलिस और सरकारी अधिकारी उन गोरों की ही बात मानते थे। और, 1857 में तो कितने ही निलहे साहबों को ही न्यायाधीश बनाकर बैठा दिया गया था।

ये निलहे गोरे किसानों पर तरह-तरह के अत्याचार करते, उनका शोषण करते और उनके घरों की स्त्रियों से बलात्कार करते। अगर किसान किसी भी तरह निलहे साहबों के ख़िलाफ़ जाने की हिम्मत करते तो उनके घर लूट लिए जाते, घरों में आग लगा दी जाती और उनको मार दिया जाता। इन निलहे साहबों के अत्याचारों की बातें खुद कई अंग्रेज़ अधिकारियों और पादरियों ने भी स्वीकार की हैं।

दे लातूर नाम का एक अंग्रेज़ 1848 में फरीदपुर का मजिस्ट्रेट था। नील कमीशन (1860) के सामने गवाही देते हुए उसने कहा :

"नील की एक भी ऐसी डिबिया इंग्लैण्ड नहीं पहुँचती जो इंसान के खून से रंगी न हो - यह बात कहने के लिए मिशनरियों (ईसाई धर्म के प्रचारकों) की आलोचना की गई है। लेकिन मैं भी यही बात कहता हूँ। फरीदपुर का मजिस्ट्रेट रहने के समय मैंने जो अनुभव प्राप्त किए हैं, उनके आधार पर मैं ज़ोर देकर कह सकता हूँ कि यह बिल्कुल सच है। मैंने कुछ किसानों

को देखा है जिनकी सारी देह बल्लमों से छेद डाली गई थी। कुछ किसानों की लाशें मेरे सामने लाई गई थीं जिनकी हत्या निलहे साहब फोर्ड ने गोली मारकर कर दी थी। मैं और भी कई किसानों की बात जानता हूँ जिन्हें बल्लम से बुरी तरह ज़ख्मी कर, पकड़कर ले जाया गया था।''

उन्नीसवीं सदी के पहले दशक में ही इन निलहे साहबों के ख़िलाफ़ बगावत की शुरूआत हुई। नदिया ज़िले के चौगाछा गाँव के विश्वनाथ सरदार नील आन्दोलन के प्रधान थे। उस समय एक साथ मिलकर आन्दोलन करना एक तरह से मुश्किल था। विश्वनाथ अकेले ही उस वक़्त निलहों के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए थे।

अत्याचारी निलहे साहबों को दण्ड देना उनके जीवन का लक्ष्य था। उस वक़्त नदिया में सैमुएल फेडी नाम का एक शक्तिशाली निलहा था। फेडी की नील कोठी ज़िला शासक इलियेट के बंगले के पास ही थी। विश्वनाथ ने एक बार दीवाली की रात को इस कोठी को लूट लिया। फेडी के कितने ही आदमी मारे गए। लेकिन विश्वनाथ ने फेडी की पत्नि को जीवित छोड़ दिया। फेडी को पकड़कर वाग्देवी खाल के पास के जंगल में ले जाया गया। उसने विश्वनाथ से जीवन की भीख माँगी और वादा किया कि यह बात वह किसी और को नहीं बताएगा। किन्तु मुक्त होने के बाद फेडी ने विश्वासघात किया और विश्वनाथ को गिरफ़्तार करा दिया।

विश्वनाथ और उनके साथियों ने जेल से छूटने के बाद, अपने दल के साथ 27 सितम्बर, 1808 को आधी रात के बाद फेडी की कोठी पर फिर हमला कर दिया। फेडी और उसके साथी लेडियार्ड को मार-पीटकर, उनके खज़ाने को लूटकर तथा उसके प्रधान रक्षक को पकड़कर वे ले गए। कुछ दिन बाद वे ब्रिटिश मिलिटरी के हाथ पड़ गए और उन्हें फाँसी दे दी गई।

इसके बाद 1829 में बंगाल के मैमनसिंह ज़िले के जलालपुर के किसानों ने निलहों के गिरोह और पुलिस के ख़िलाफ़ मोर्चा बाँधा। नील की कोठी के पाँच सौ लठैतों का मुकाबला करने के लिए कई गाँवों के हज़ारों किसान इकट्ठा हो गए। पुलिस ने नील की कोठी का पक्ष लेकर गाँव के मुखिया लोगों को गिरफ़्तार किया, लेकिन किसानों ने इकट्ठा होकर पुलिस को ही घेर लिया। पुलिस के आने का समाचार आस-पास के गाँवों में पहुँचाने के लिए किसानों ने पहरे की व्यवस्था की थी। लोग ऊँचे वृक्षों पर चढ़ जाते

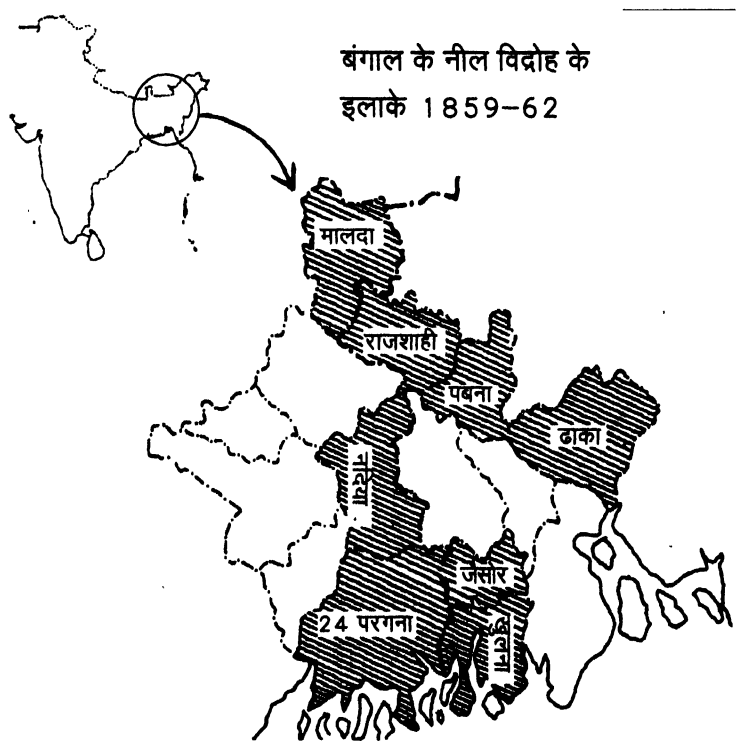

बंगाल के नील विद्रोह के इलाके 1859–62

थे और चारों तरफ़ नज़र रखते थे। पुलिस को देखते ही शंख और घंटा बजाकर आस-पास के गाँवों को सूचना दे देते थे। यह सांकेतिक शब्द सुनते ही किसान लाठी, बल्लम, बर्छा आदि हथियार लेकर दौड़ पड़ते और पुलिस को मार भगाते।

इस तरह 1850 से पहले भी निलहों के खिलाफ किसानों की लड़ाई चल रही थी। गोरों के लठैतों और अंग्रेज़ सरकार की पुलिस के साथ किसानों की इन मुठभेड़ों ने 1859-60 में खुले विद्रोह का रूप धारण कर लिया। पहले किसानों ने अंग्रेज़ शासकों के पास आवेदन - निवेदन कर न्याय पाने की कोशिश की। फिर नील की खेती का बॉयकॉट किया और आख़िर में जब उनसे ज़बर्दस्ती नील की खेती कराने की कोशिश की गई तो उन्होंने हथियार उठा लिए। उनका विद्रोह बंगाल में नील की खेती समाप्त करके ही शान्त हुआ। किसानों के इस विद्रोह का वर्णन उस वक़्त कितने ही लोगों ने किया है। मार्च 1860 में निलहों ने जो स्मृतिपत्र बंगाल के गवर्नर को दिया उसमें उन्होंने लिखा:

''किसान संगठित रूप से विद्रोही बन गए हैं। उनसे नील की खेती कराना संभव नहीं है।''

1860 के मार्च महीने से लेकर जून के मध्य भाग तक नदिया, जैसोर, बारासात, पबना, राजशाही, फरीदपुर और बंगाल के अन्य ज़िलों में विद्रोह तेज़ी से फैल गया। 'हिन्दू पेट्रियट' नाम के अख़बार में शिशिर कुमार घोष के छपे पत्र किसानों की संग्रामी दृढ़ता के बारे में बहुत प्रकाश डालते हैं। 8 अगस्त 1860 के पत्र में उन्होंने लिखा:

'यशोहर (जैसोर) की रैयत बिगड़ गई है। संग्राम के प्रधान केन्द्र छालकोपा, बिजलिया, रामनगर आदि स्थानों की कोठियाँ हैं। हज़ार-हज़ार किसानों ने नील कोठी का आक्रमण रोकने की दृढ़ प्रतिज्ञा कर रखी है। बलपूर्वक फसल ले जाने के लिए निलहे रिवॉल्वर, गोली-बारूद और लठैत इकट्ठा कर रहे हैं। गाँव के किसान भी लाठी और बल्लम इकट्ठा कर रहे हैं। उनकी प्रतिज्ञा है कि मूल्य पाए बिना वे फसल न ले जाने देंगे।'

नील विद्रोह की समीक्षा करते हुए 1880 में शिशिर कुमार घोष ने 'अमृत बाज़ार पत्रिका' में लिखा :

'इस विद्रोह में बंगाल के पचास लाख किसानों ने जिस देशप्रेम, आत्मत्याग और निष्ठा का परिचय दिया, उसका उदाहरण दुनिया के इतिहास में विरल है। जिन किसानों को जेल में बंद कर रखा गया था, वे भी नील की खेती करने को राज़ी न हुए। हालाँकि सरकारी तौर पर वादा किया गया था कि उन्हें जेल से रिहा कर दिया जाएगा, उनके घर जिन्हें निलहों ने ध्वस्त कर दिए थे, बनवा दिए जाएँगे। उनके स्त्री, पुत्र, परिवार को, जो भिखारी बनकर दर-दर ठोकरें खाते फिरते थे, फिर वापस ला दिया जाएगा।'

किसानों के इस विद्रोह को देखकर निलहे और अँग्रेज़ काँप रहे थे। जुलाई 1860 में ब्रिटिश जमींदार और वणिक समिति के अध्यक्ष मैकिन्टे ने इंग्लैण्ड के भारत सचिव चार्ल्स वुड को पत्र लिखा :

हालत इस वक़्त बिलकुल अराजकतापूर्ण है। किसान अपना कर्ज़ और इकरारनामा अस्वीकार कर ही शान्त नहीं होते, वे महाजनों और मालिकों (अंग्रेज़ों)को देश से निकाल बाहर करने का बंदोबस्त कर रहे हैं। इस देश से सब यूरोपियों को निकाल बाहर कर अपनी अपहृत संपत्ति को फिर से वापस लेने की व्यवस्था करना तथा यूरोपियों से लिया गया सारा कर्ज़ रद्द करना ही उनका उद्देश्य है।'

सारे बंगाल में नील विद्रोह को शुरू होते देख अंग्रेज़ शासकों ने जाँच के लिए 31 मार्च, 1860 को नील कमीशन बैठाया। बंगाल सरकार के सेक्रेटरी सेटनकर इसके अध्यक्ष और तीन अंग्रेज़ तथा एक बंगाली इसके सदस्य थे। किसानों का कोई प्रतिनिधि नहीं था। उनका कोई केन्द्रीय संगठन भी नहीं था। लेकिन रेवरेण्ड सेल नामक एक अंग्रेज़ पादरी को रैयत और मिशनरियों के प्रतिनिधि के तौर पर लिया गया था।

इस कमीशन ने 27 अगस्त 1860 में अपनी रिपोर्ट पेश की। सरकारी कमीशन होते हुए भी इसे स्वीकार करना पड़ा कि निलहे साहबों के ख़िलाफ़ लगाए गए अधिकांश आरोप सच हैं। यह स्वीकार करते हुए भी निलहों के अत्याचार रोकने के लिए कोई कानून नहीं बना। सिर्फ परचे छपाकर सरकार की तरफ से सूचित कर दिया गया कि - 1. सरकार नील की खेती के पक्ष या विपक्ष में नहीं, 2. अन्य फ़सलों की भाँति नील भी बोने, न बोने का अधिकार प्रजा को है, 3. कानून भंग कर अत्याचार या अशांति का कारण पैदा करने पर निलहे साहबों या विद्रोही किसानों में से किसी को भी कठोर दंड से बचने न दिया जाएगा। अंग्रेज़ सरकार ने इस तरह तटस्थता का दिखावा किया, लेकिन पुलिस और मिलिटरी भेजकर जगह-जगह किसानों के दमन के लिए कदम उठाए। पर नील की खेती न करने का किसानों का आन्दोलन तेज़ी से चलता रहा। उन्होंने निलहों और जमींदारों को लगान देना बंद कर दिया।

अगस्त-सितंबर 1860 में बंगाल के छोटे लाट ग्रान्ट, नदी के रास्ते बंगाल की हालत देखने गए थे। वापस आते वक़्त हज़ारों किसान नदी के दोनों किनारों पर आकर जमा हुए थे। उन्होंने ग्रान्ट से ऐसा कानून बनाने की माँग की थी जिससे उन्हें नील की खेती न करनी पड़े। किसानों के असंतोष के इस रूप को अपनी आँखों देखकर ही ग्रान्ट ने किसानों के दमन के लिए कठोर कदम उठाने की निलहों की माँग ठुकरा दी थी। उन्होंने निलहों की इस माँग को खतरनाक बताते हुए लिखा कि ऐसा करने से बड़ा भारी किसान विद्रोह हो जाएगा जो भारत में ब्रिटिश पूँजी को नष्ट कर देगा।

नील किसानों के इस विद्रोह की अंत में जीत हुई। बंगाल में नील की खेती बन्द हो गई। निलहे यहाँ से हटकर बिहार तथा उत्तर प्रदेश के किसानों का खून चूसने लगे। आगे चलकर बीसवीं सदी में चंपारण और खेड़ा के किसान भी इन शोषकों के खिलाफ उठ खड़े हुए थे। बाद में रासायनिक क्रिया से बनने वाले नील ने नील की खेती हमेशा के लिए समाप्त कर दी। ■

इस लेख के लिए सामग्री प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'भारत का मुक्ति संग्राम' - लेखक - अयोध्या सिंह; एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा प्रकाशित 'इन्डियाज़ स्ट्रगल फॉर इन्डिपेंडेंस - विजुअल्स एंड डॉक्यूमेंट्स' और पश्चिम बंगाल के सूचना एवं संस्कृति विभाग द्वारा प्रकाशित 'मुक्तिर संग्रामे भारत' से ली गई है।

कुं. सामा राजपूत छठवी
हाटपीपल्य देवास (म.प्र)

मेरा घर

यह मेरा घर है घर के आस-पास बाग-
बगीचा है आम के चार पेड़ हैं एक स्कूल
है। मेरे घर के सामने से रेल जाती है रेल की
आवाज आते ही मैं घर में से आती हूँ और बगीचे
के फाटक के सामने खड़ी हो जाती हूँ रेल चली जाती है।

और मैं मेरे बगीचे में चली जाती हूँ बगीचे के
पास में आम के पेड़ के नीचे मेरी गाय बाँधी जाती
है। फिर मैं गाय के पास जाती हूँ उसे घास
डालती हूँ फिर पानी पिलाती हूँ फिर मैं
स्कूल जाती हूँ। और मेरी एक छोटी बहन
और मेरे भईया भी स्कूल जाते हैं।

लेकिन हमारा स्कूल यहाँ से दो कोस दूर है।
तो हम तीनों भाई-बहन रेल में बैठ कर जाते
हैं। और हम फिर उधर से हमारे पापा नौकरी
से आते समय हम तीनों भाई-बहन को साथ
लेकर जाते हैं और मेरी मम्मी खेत का काम कर
के मम्मी के साथ हम भी हाथ बँटाते हैं।

कु॰ सीमा राजपूत, छठवीं, झाटपीपल्या, देवास, (म.प्र.)

कु॰ सीमा राजपूत, छठवीं, झाटपीपल्या, देवास, (म.प्र.)

सीमा राजपूत, छठवीं, झाटपीपल्या, देवास, म. प्र.

बूँदों का है कमाल

देखो अब गरमी की
गलती नहीं है दाल
बूँदों का है कमाल

जहाँ धूल उड़ती थी
हरियाली नाच रही
फूलों की गंधों को
पुरवाई बाँच रही

पानी ही पानी है
लबालब हैं नदी, ताल

धूप, आग जैसी थी
जाने अब किधर गई
एक झड़ी से लू भी
पारे-सी बिखर गई

टूँटों से भरा हुआ
सारा जंगल निहाल

खेतों में फसलों का
फिर से है राजपाट
छपक्-छपक् पानी है
गली-गली, घाट

कुछ दिन की कोंपल की
उम्र लगे एक साल

कभी-कभी अंबर में
इंद्रधनुष मनहारी
रिमझिम या प्रिय फुहार
वर्षा की बलिहारी

धरा लगे सुंदरतम्
खुशियों में है उछाल
बूँदों का है कमाल

❑ राजा चौरसिया
चित्र ❑ आशा रोमन

खेल काग़ज़ का

चिड़ियें

चीं चीं करती चिड़ियें, तरह-तरह की चिड़ियें। काग़ज़ से भी तुम अलग-अलग तरह की चिड़ियें बना सकते हो। दो तरीके यहाँ बता रहे हैं। और तुम खुद खोजो।

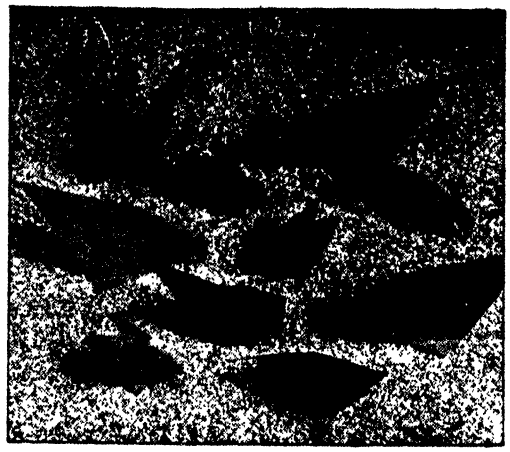

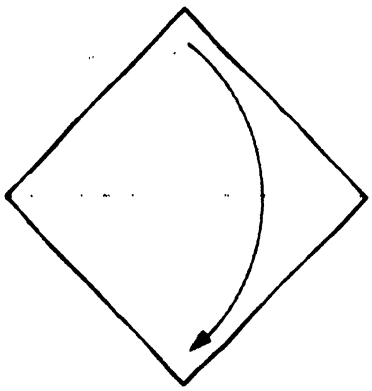

1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। चित्र में दिखाई गई टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ो।

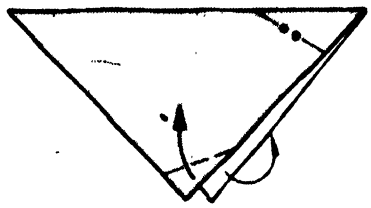

2. अब इस आकृति के ऊपरी दाएँ कोने को अन्दर की ओर दबाते हुए मोड़ो। फिर नीचे की ओर से दोनों सतहों को तीर की दिशा में मोड़ लो।

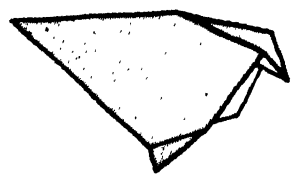

3. बस बन गई चिड़िया।

एक और तरीका

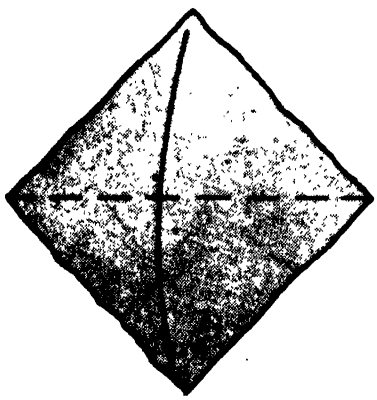

1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

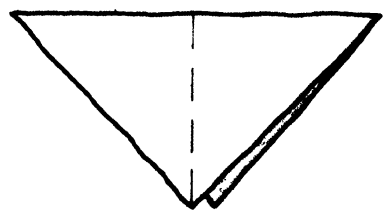

2. इस तरह। अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से मोड़ो। मोड़ पक्के करके खोल लो।

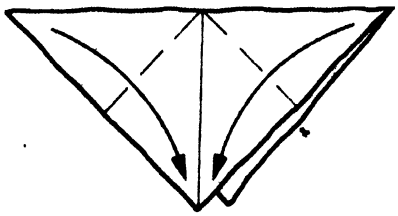

3. चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ। आगे के चित्र थोड़े बड़े करके दिखाए हैं।

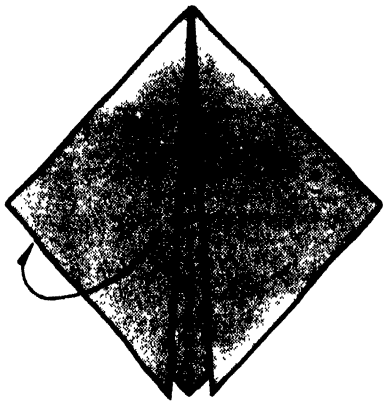

4. इस तरह की आकृति बनेगी। इस आकृति को बीच से मोड़ना है। दाएँ-बाएँ हिस्सों को पीछे लें जाकर मिलाते हुए यह मोड़ बनाओ। फिर आकृति को घुमा लो।

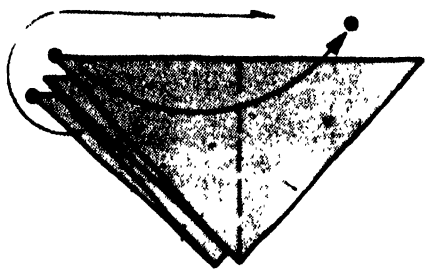

5. इस तरह। अब इस चित्र में बाईं ओर की सबसे ऊपरी सतह को मोड़कर तीर की दिशा में काले बिन्दु तक लाओ। फिर बाईं ओर की सबसे निचली सतह को भी मोड़कर तीर की दिशा में काले बिन्दु तक ले जाओ।

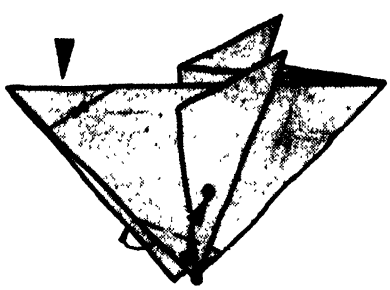

6. ऐसी आकृति बनेगी। अब बाईं ओर के कोने को अन्दर की ओर दबाते हुए मोड़ो। फिर नीचे की ओर से दोनों सतहों को तीर की दिशा में मोड़ते हुए काले बिन्दु तक लाओ। आकृति को पलटकर उस तरफ भी यही क्रिया दोहराओ।

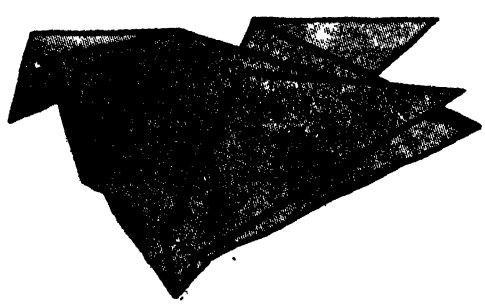

7. यह एक और तरह की चिड़िया तैयार है।

एक स्वतंत्र तोता

एक गाँव था। उस गाँव में मोहन रहता था उसका परिवार भी उसके साथ रहता था। उसकी दो लड़कियाँ थीं। बड़ी लड़की का नाम शीला था और छोटी लड़की का नाम गीता था। उसकी एक पत्नि थी। एक दिन उसके सामने वाली गली से एक तोते वाला जा रहा था। तभी बड़ी लड़की शीला ने कहा पिताजी मुझे ये नीले पंखों वाला तोता बहुत पसंद है मुझे ये तोता चाहिए। ऐसी उसने ज़िद की। पिताजी ने वो तोता ख़रीद लिया उसके लिए। वे लोग उसे अनाज पानी और हरी मिर्च भी देते थे। लेकिन उस छोटे-से पिंजड़े में उसका मन नहीं लगता था। उसने पिंजड़े से सर टकरा-टकराकर सर फोड़ लिया। तब उसकी छोटी बेटी ने पिताजी से कहा कि उसके लिए नया बड़ा पिंजरा बना दीजिए जिससे कि वो इधर-उधर जा सके। तो पिताजी ने तोते के लिए नया और बड़ा पिंजरा बनाया। फिर वह उनके साथ रहता उनसे बोलता था। फिर तोता बहुत खुश रहता था। तोते के सर का घाव देखकर गीता की मम्मी को उस पर दया आ गई। उसने पिंजरे का दरवाज़ा खोलकर रख दिया। सुबह से शाम हो गई लेकिन तोता नहीं उड़ा। फिर शाम को तोता नीले आसमान में ऊँची उड़ान उड़ा। उन्हें बहुत खुशी हुई। और वह स्वतंत्र पंछी बन गया।

आशा कटयारे, छठवीं, पता नहीं लिखा।

पेड़ बचाया

मेरे खेत में एक आम का पेड़ है। मैं रोज़ उस पेड़ पर चढ़ता हूँ। एक दिन मैं उस पेड़ पर बैठा खेत की हरियाली देख रहा था। कुछ आदमी आए और उस पेड़ को काटने लगे। उन्होंने मुझको नहीं देखा। मैं ऊपर से चिल्लाया, "रुक जाओ।" मैं पेड़ से नीचे उतरा। मैंने कहा, "तुम लोग इस पेड़ को क्यों काट रहे हो?'

उसने कहा, "इस पेड़ को हम बाज़ार में बेचेंगे।"

मैंने उनसे कहा, "इस पेड़ को मत काटो।" लेकिन वे नहीं माने। इस बात से मेरी उनसे बहस हो गई। इतने में मेरे दादा जी वहाँ आ गए। उनको देखकर वे लोग वहाँ से भाग गए। मैं और दादा जी हँसने लगे।

सुरेश, आठवीं, अमरखोह, रायसेन, म.प्र.

सोहित अग्रवाल, छठवीं, नौगाँव, छतरपुर, म.प्र.

मेरा पन्ना

पानी बरसा

एक बार पानी बरस रहा था । सुबह से शाम तक पानी बरसा। जब पानी बन्द हो गया। तब हम अपने पापा के साथ बाहर निकले। खेत की तरफ गए तो चारों तरफ पानी भरा था। एक तरफ दो आदमी पानी में डूब रहे थे। बचाओ-बचाओ चिल्ला रहे थे। बगल में दो-चार आदमी और खड़े थे। हम लोग परेशान हो गए। उस जगह एक घर था। उनके यहाँ एक ट्रेक्टर था। मालिक का नाम ननकू था। उन्होंने ट्रॉली के पहिए का ट्यूब निकाला। वह ट्यूब दोनों आदमी के बीच में डाल दिया। दोनों आदमी उसी के सहारे बाहर निकल आए।

संदीप, चौथी, हरचन्दपुर, रायबरेली, उ. प्र.

आशा कुल्हरी, झुन्झुनू, राजस्थान

लाली और नाना

मेरे दोस्त प्रमोद व विनोद के यहाँ दो बन्दर थे। एक का नाम लाली था, दूसरे का नाम नाना था। दोनों परिवार के सदस्य बन गए थे। उन्हें तैरने का बहुत शौक था। हम उन्हें तालाब पर ले जाते, वहाँ पर वे बहुत नहाते थे। लाली बड़ी थी अत: अपनी चेन खोलकर भाग जाती थी। वह पड़ोसियों को परेशान करती थी। पड़ोसी परेशान होते थे, लेकिन बच्चे नहीं। बच्चे उससे बहुत प्यार करते थे। पड़ोसियों की बार-बार शिकायत आती थी इससे परेशान होकर लाली को जिससे लाए थे, उसी को वापस दे दिया। लाली व नाना दोनों आपस में बहुत प्यार करते थे। इसलिए लाली के जाने के बाद नाना की हालत खराब होने लगी। तब हमने सोचा कि उसे आज़ाद कर दिया जाए। अत: उसे लेकर हम बहुत दूर जंगल में चले गए। वहाँ जाकर हमने उसकी चेन खोल दी। वह पेड़ पर चढ़ गया। हम वहाँ से आने लगे तो वह भी हमारे साथ-साथ आने लगा। हमारी बहुत कोशिश के बाद भी वह हमारे साथ आ गया। दूसरी बार फिर हमने उसे सायकल पर ले जाकर बहुत दूर छोड़ दिया। उसके बाद हम तेज़ी से दूसरे रास्ते से घर आ गए। उसके बाद वह फिर कभी नहीं आया। परन्तु अब जब भी हम किसी बन्दर को देखते हैं तो उन दोनों की याद आ जाती है।

देवेन्द्र कुमार कोठारी, आगर मालवा, शाजापुर, म. प्र.

वर्ग पहेली – 85

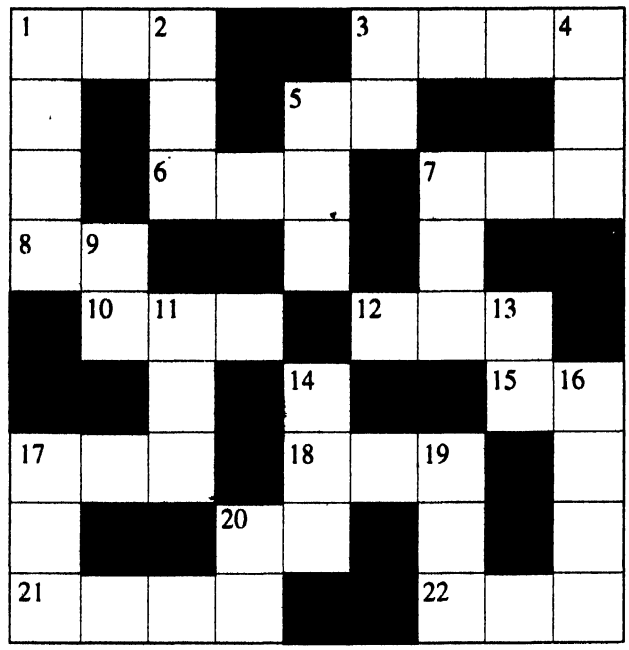

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. हम लाकर दें, आक्रमण (3)
3. बम और नाद की उलटफेर में है दुष्ट (4)
5. दही को पतला करके बनाया गया पेय (2)
6. एक सफेद पक्षी, जिसकी जाति में बगुला भी शामिल है (3)
7. 'मालवा का बन्ना' से बनाओ चाहने वाला (3)
8. उल्टी दाल भार तले दबी है (2)
10. सब्ज़ी का सबसे ज़रूरी मसाला (3)
12. नमूना (3)
15. अस्पताल में ढूँढो गर्मी (2)
17. यदि (3)
18. मसला हल होगा अभिवादन से (3)
20. जो खिलकर फूल बनती है (2)
21. वाद और रज़ा के मेलजोल से बना है द्वार (4)
22. ज़मीन का कर (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. ज़हर (4)
2. लम्बा साला में इच्छा (3)
3. हिसाब लिखने की किताब (2)
4. लोगों का जमघट, भीड़-भाड़ (3)
5. समस्या (3)
7. तारीफ या बढ़-चढ़कर किया गया वर्णन (3)
9. किसी को दी जाने वाली चीज़, उपहार नहीं (2
11. लाल रंग की दाल (3)
13. कविता रूपी वह ग्रंथ जो अर्जुन और कृष्ण की बातचीत के लिए प्रसिद्ध है (2)
14. छाती के दोनों ओर की गोलाकार हड्डियाँ (3)
16. तरह-तरह का अच्छा-अच्छा भोजन (4)
17. शपथ (3)
19. यम जाल में साहस (3)
20. घास-फूस का तिनका (2)

इस पहेली का मूल रूप हमें भेजा है निर्मल कुमार गोयल ने पटना, बिहार से।

वर्ग पहेली – 85 का हल अक्टूबर, 1998 के अंक में देखें। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। बल्कि संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का अक्टूबर, 1998 अंक उपहार में भेजा जाएगा।

सफेद दाढ़ी वाला बकरा

❑ समद बहरंगी

सुनने में आया है कि हमारे इसी गाँव के हाजी मेंहदी का बकरा, दूसरे गाँव के ज़मींदार मिर्ज़ा का मेमना और हाजी कासिम का कुत्ता और मरहदी मोहम्मद हसन का बछड़ा घर से भाग गए और जंगल में जाकर एक-दूसरे के मित्र बन बैठे। इधर-उधर घूमते-फिरते, खाते-पीते वह कुछ ही दिनों में काफी मोटे हो गए थे।

एक रात वह बैठे बातें कर रहे थे। दूर से उन्हें प्रकाश नज़र आया। बकरा, जिसकी दाढ़ी सफ़ेद हो चुकी थी, बोला, "हाय! काश! हम हुक्का दम कर सकते।"

दूसरों ने कहा, "यह कौन-सा मुश्किल काम है। कुत्ते साहब पानी ले आएँ। बछड़े जी तम्बाकू का प्रबन्ध करें, श्रीमान् मेमने आग ले आएँ, उस समय हुक्का दम हो सकता है।"

श्रीमान् मेमने खड़े हुए और आग लेने चल पड़े। चलते-चलते उस प्रकाश के समीप पहुँचे। देखते हैं वहाँ तो बारह भेड़ियों का एक झुण्ड बैठा हुआ है और बातों में व्यस्त है। उसके बदन में भय ने कँपकँपी पैदा कर दी। उसने उन्हें झट से सलाम किया। भेड़ियों ने पूछा, "मित्र मेमने, तुम कहाँ और यह जगह कहाँ?"

मेमने ने डरते हुए कहा, "मैं आप लोगों से आग लेने आया था ताकि अपने मित्र जनाब बकरे के लिए हुक्का भर सकूँ।"

भेड़ियों ने कहा, "ख़ैर, अभी बैठो, अपनी थकन उतार लो।"

मेमना गया और बैठ गया। एक बोला, "किसकी प्रतीक्षा हैं?"

दूसरा बोला, "सब्र से काम लो, कोई और आएगा।"

जनाब बकरे ने काफ़ी प्रतीक्षा की मगर श्रीमान् मेमना नहीं लौटा। आख़िर बकरे ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा, "बछड़े जी, जाकर देखो श्रीमान् मेमने कहाँ अटक गए? कहीं किसी मुसीबत में तो नहीं फँस गए?"

बछड़े जी चलते-चलते वहीं पहुँचे। देखा, भेड़ियों के घेरे में बेचारे मेमने बैठे हैं। वह भी भय से काँपने लगा। मगर इस भय को प्रकट न किया और मेमने को ज़ोरदार फटकार लगाई, "उल्लू के पट्ठे! यहाँ बैठे-बैठे क्या कर रहे हो? आग लेने आए थे या इन श्रीमानों से गप्प मारने? या अल्लाह! जल्दी उठो। चलते हैं। बकरे भाई के हुक्के का समय निकला जा रहा है।"

भेड़ियों ने कहा, "गुस्सा थूक दो मित्र! आओ, थोड़ा बैठो, थकन तो उतार लो।"

बछड़ा भी डर से बिना कुछ कहे उनके बीच जाकर बैठ गया। एक भेड़िया ने पूछा, "अब किसकी प्रतीक्षा है?"

दूसरे बोले, "मित्र, व्याकुल मत हो। अभी एक और आता है।"

जनाब बकरे ने जितना भी इन्तज़ार किया। न मेमना लौटा न बछड़ा। वह दुःखी हो उठा और बोला, "कुत्ते साहब! जाकर देखो, वे लोग कहाँ अटक गए?"

प्रकाश के समीप जब कुत्ता पहुँचा तो यह देखकर उसके घुटने काँप उठे कि मेमना व बछड़ा भेड़ियों के बीच में बैठे गप्प मार रहे हैं। उसने कुछ प्रकट न होने दिया और चिल्लाकर बोला, "ऐ! मैं तुम लोगों से सम्बोधित हूँ। सुना कुछ? यहाँ पर दोनों बैठे हँस-हँसकर गप्प मार रहे हो, वहाँ जनाब बकरे आग की प्रतीक्षा कर रहे हैं? शर्म नहीं आती तुम दोनों को? उठो, दोनों आगे बढ़ो, उनका हुक्के का समय निकल रहा है।"

भेड़ियों ने कहा, "मित्र! क्यों बेकार में क्रोध दिखा रहे हो? इन बेचारों का कोई कसूर नहीं है। आओ तुम भी थोड़ी देर आकर बैठो। थकन उतर जाए तो चले जाना।"

कुत्ते साहब भी भय के मारे इन्कार किए बिना चुपचाप अपने दोनों साथियों के समीप बैठ गए।

जब जनाब बकरे ने देखा कि कुत्ते साहब भी अटक गए तो मजबूर होकर वे स्वयं उठे और अपने साथियों की खोज में चल पड़े। रास्ते में एक भेड़िये का मृत शरीर मिला उन्हें। एक सींग तेज़ी से मारकर उसे सर पर उठा लिया और चल पड़े। जब प्रकाश के समीप पहुँचे तो देखा, भेड़ियों के बीच में मेमना, बछड़ा, कुत्ता फँसे बैठे हैं। भेड़ियों के मुँह से लार बह रही है। यह सब देखकर वह मित्रों पर गरजा, "अरे मूर्खो! मैंने तुम्हें आग के लिए भेजा था और तुम यहाँ इनके साथ बैठ गप्पे मार रहे हो?"

भेड़ियों ने कहा, "क्रोधित न हो मित्र बकरे! बैठो, थकन दूर करो।"

बकरे ने देखा वह बहुत बुरी तरह फँस गया है। चतुरता से काम लेना पड़ेगा। फ़ौरन भेड़ियों की तरफ मुँह करके उनको बुरा-भला कहने लगा, "गधों के बाप! बड़ी अच्छी तरह तुम्हें रंगे हाथों पकड़ा। तुम्हारे पिता बीस खालों के मेरे कर्ज़दार थे। सात खा चुका हूँ। एक मेरी सींग पर है। तुम में से कोई भी अपनी जगह से हिलना मत क्योंकि बाक़ी गिनती में तुम हो जिन्हें खाकर मैं अपना हिसाब बराबर करूँगा। कुत्ते साहब पकड़ो इन्हें। भागो मत डरपोको।"

इतना सुनते ही सारे भेड़िये सर पर पैर रखकर भाग खड़े हुए। इस तरह से पलक झपकते ही वहाँ से ग़ायब हुए जैसे पहले कभी वह यहाँ थे ही नहीं। कुत्ता भी तेज़ी से भौंककर कह रहा था, "अभी चीर-फाड़कर तुम सब को फेंकता हूँ।"

बकरे ने मित्रों को लिया और आगे बढ़ा और कहा, "इस जाड़े में अब भेड़िये लौटने से रहे। चलो, कहीं छुप जाते हैं।"

एक वृक्ष टेढ़ा-मेढ़ा-सा थोड़ा झुका-सा था। बकरा उस पर चढ़कर सबसे ऊपर की शाख पर जाकर बैठ गया। उसके नीचे कुत्ता, कुत्ते के नीचे मेमना और बछड़े ने जितनी भी कोशिश की पेड़ पर चढ़ने की, मगर चढ़ नहीं पाया। बड़ी कठिनता से किसी प्रकार वहीं टहनी में छुपकर बैठ गया।

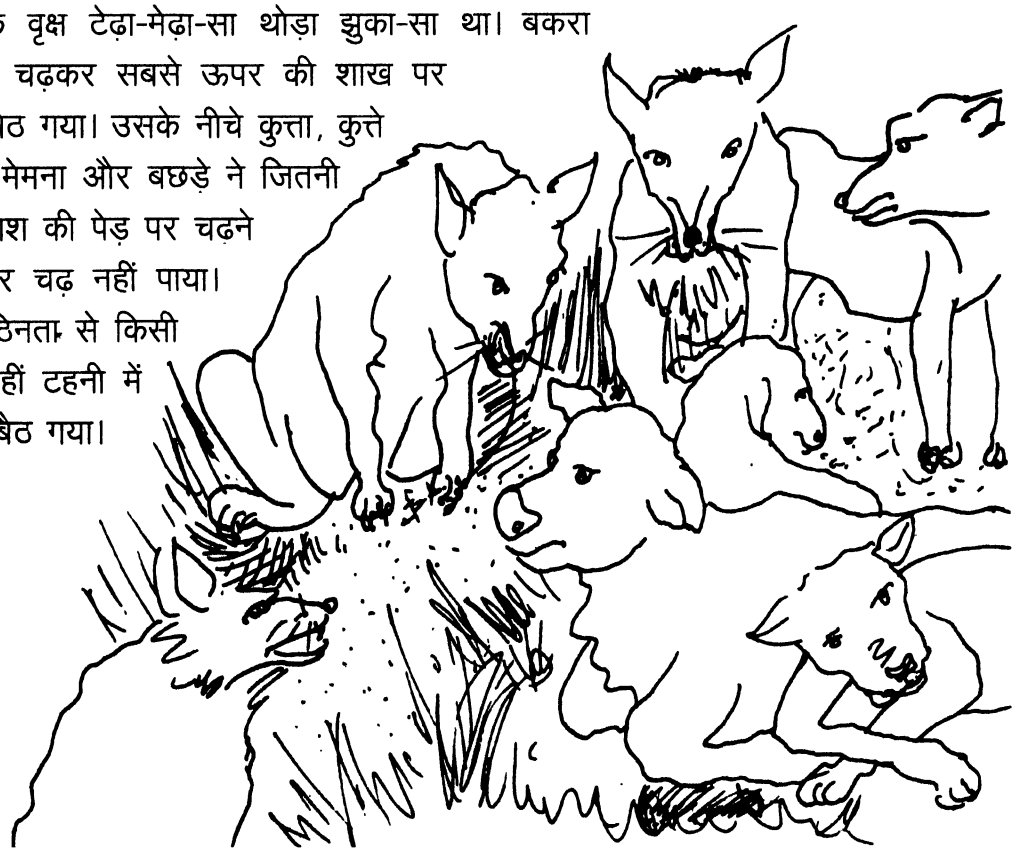

भेड़िये दौड़ते-दौड़ते जब थक गए तो सुस्ताने के लिए ठहर गए। उनमें से एक बोला, "देखो तो मैं क्या कहना चाह रहा हूँ - कहाँ बकरा और कहाँ भेड़िया? मगर बकरे ने हमें धमकाकर कहाँ तक भगा दिया है? चलो, लौटते हैं और छठी का दूध उन्हें याद दिलाते हैं। क्या समझ रखा है उस बकरे ने अपने आपको?"

भेड़िये लौटे और बकरे व साथियों को ढूँढा मगर उन्हें वे कहीं नज़र न आए। थककर वह सन्दज़ वृक्ष के नीचे बैठ गए और भविष्य-फल देखने लगे। उनमें से एक भेड़िया ज्योतिषी भी था। वह देखने लगा कि बकरे व उसके मित्र कहाँ छुपे हैं। तभी बछड़ा अपने को टहनियों के बीच सँभाल न सकने के कारण धड़ाम से एक भेड़िये के सर पर आ गिरा। यह सब देखकर बकरे के हाथों के तोते उड़ गए कि अब तो सब गुड़-गोबर हो गया मगर अपने को सँभालकर वह चीखा, "बछड़े जी! सबसे पहले उस पाखंडी ज्योतिषी को पकड़ें ताकि वह भाग न सके। जल्दी साथियो! सबको पकड़ो।"

भेड़िये दोबारा फिर सर पर पैर रखकर ऐसे भागे जैसे गधे के सर से सींग। बकरे ने कहा, "जानते हो, यह भेड़िये फिर आएँगे, कुछ करना पड़ेगा।"

सबने मिलकर गड्ढा खोदा और उसमें कुत्ते को गाड़कर मिट्टी से ढँक, कुछ जली ईंटें ऊपर सजा दीं। फिर बकरा बोला, "साथियो, यह श्री काकला की पवित्र मज़ार है।"

भागते-भागते भेड़िये लोमड़ी से टकराए। लोमड़ी ने आश्चर्य से पूछा, "इतनी जल्दी काहे की है?"

वे बोले, "बकरे के भय से भाग रहे हैं। वह हमें खाना चाहता है।"

लोमड़ी ने कहा, "तुम्हें बेवकूफ़ बनाया है, कहीं बकरा भेड़ियों को खा सकता है? चलो लौटो, मैं जानती हूँ, उन्हें कैसे पाठ पढ़ाना है?"

लोमड़ी ने इतना समझाया कि भेड़ियों के दिल से डर-भय जाता रहा। वे लौट पड़े। आगे-आगे लोमड़ी और पीछे-पीछे भेड़ियों को देखकर बकरा पल-भर में ही सब-कुछ समझ गया। चीखकर बोला, "वाह लोमड़ी वाह! मेरे बाक़ी क़र्ज़ लौटा रही हो? तुम्हारे स्वर्गीय पिता 24 खालों के मेरे क़र्ज़दार थे। दो हफ़्ते पहले 12 भेड़िये लाई जिन्हें मैंने खाया था। अब फिर पहले की तरह

बारह और ले आई हो? शाबाश! -- शाबाश!"

भेड़ियों ने कहा, "कहीं लोमड़ी हमें धोखे से तो नहीं लाई है यहाँ?"

लोमड़ी बोली, "गधे ने कहा बेवकूफ़ ने विश्वास किया। नहीं जानते हो तुम लोग इन चतुर-चंडालों को?"

बकरा बोला, "लोमड़ी! अगर तुम सच कहती हो तो आओ इस पवित्र मज़ार पर हाथ रखकर कसम खाओ कि मेरी क़र्ज़दार नहीं हो तुम? इस कसम के बाद मामला समाप्त समझो।"

लोमड़ी सीधे मज़ार पर पहुँची और उस पर हाथ रखकर बोली, "अगर झूठ बोलूँ तो इस 'पीर' के क्रोध से नष्ट हो जाऊँ।"

जैसे ही लोमड़ी ने यह शब्द कहे, कुत्ता गड्ढे से निकला और लोमड़ी की गर्दन पकड़ ली और उसका दम घुट गया। भेड़िये यह देखकर फिर भाग खड़े हुए। इस बार जंगल के उस पार।

अब पौ फट रही थी। बकरा बोला, "मित्रो! मेरा विचार है कि हम सब अपने-अपने घर लौट जाएँ वरना यह जंगली पशु हमें जीने नहीं देंगे।"

सबने जनाब बकरे की बात को ध्यान से सुना, उसे पसन्द किया और उचित समझा। सब अपने-अपने गाँव में स्थित अपने घर लौट गए।

● फारसी से अनुवाद : नासिरा शर्मा। कहानी संग्रह 'काली छोटी मछली' से नासिरा शर्मा के सौजन्य से।

सभी चित्र ● सुधा मेहता

आई आई बारिश!

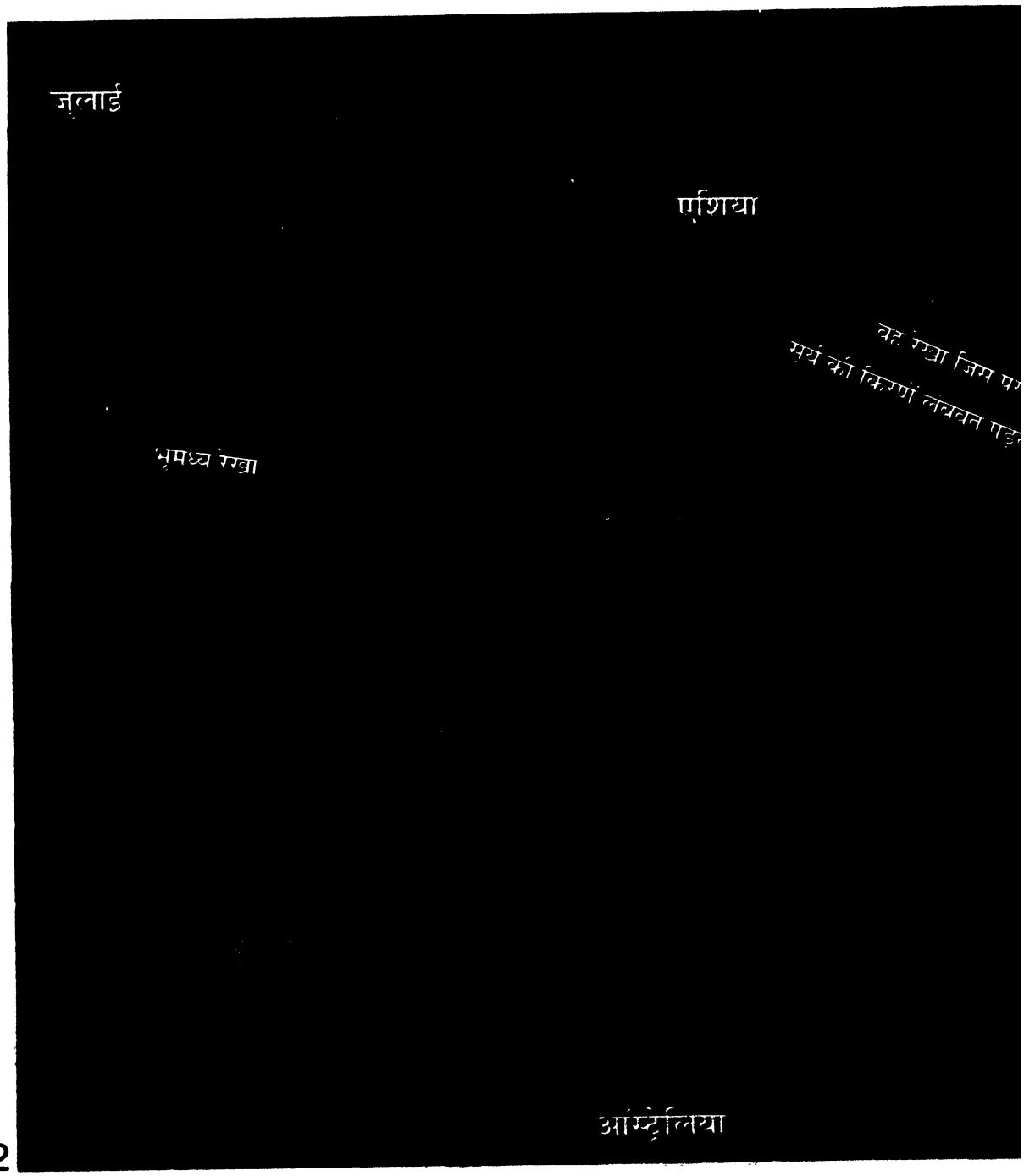

जुलाई
एशिया
वह रेखा जिस पर
सूर्य की किरणें लंबवत पड़
भूमध्य रेखा
आस्ट्रेलिया

होती कैसे है यह बारिश? यह तो तुमने कई बार पढ़ा या सुना होगा। यही कि जब हवा गर्म होकर फैल जाती है तो उसका दाब कम हो जाता है। साथ ही नदी, तालाब, झीलों की सतह और उनके किनारे से लगी ज़मीन के ऊपर की हवा के तापमान में फर्क आता है। या कहीं ठण्डी और गर्म हवा पास-पास हो, तो ठण्डी हवा दबाव के असन्तुलन को ठीक करने के लिए गर्म और कम दबाव वाली हवा के क्षेत्र की ओर बहती है। और इसी को हम हवा का बहना कहते हैं।

यही बात इतने ही सरल तरीके से सामने के चित्र में दिखाई गई है। लेकिन असल में जून-जुलाई के बारिश वाले महीनों में हमारे देश में और आसपास के देशों में, यानी मध्य एशिया के इलाके में, यही घटना बहुत बड़े पैमाने पर और इससे काफी ज़्यादा जटिल तरीके से होती है।

सूर्य के इर्दगिर्द घूमते हुए, जून-जुलाई के महीनों में पृथ्वी का उत्तरी गोलार्ध सूर्य की ओर झुका होता है। पूरा मध्य एशिया और दक्षिण-पूर्वी एशिया, ख़ासकर भारत व पाकिस्तान, बुरी तरह से तप चुका होता है, जिससे एक भीषण कम दबाव का क्षेत्र बनता है। यह चित्र में एक बड़े L से दिखाया गया है। दूसरी तरफ दक्षिणी गोलार्ध में बसे ऑस्ट्रेलिया का मौसम इस समय ठण्डा होने लगता है और वहाँ एक हल्का सा अधिक दबाव का क्षेत्र बनता है। यह एक छोटे H से दिखाया है। इस इलाके के समुद्र के ऊपर आमतौर से अधिक दबाव का आलम ही रहता है, जो इस मौसम में और बढ़ जाता है। इसे बड़े H से दिखाया है। यह क्यों होता है, यह तो अभी तक पूरी तरह मौसम-वैज्ञानिक समझ नहीं पाए हैं। परन्तु इस सबका नतीजा यह होता है कि इन अधिक दबाव वाले क्षेत्रों से ठण्डी हवा समुद्रों के ऊपर से बहकर कम दबाव वाले इलाकों की ओर जाती है। समुद्र के ऊपर से बहते हुए यह कुछ गर्मी और बहुत सारी नमी सोख लेती है। और फिर दक्षिण पूर्वी एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप तक पहुँचते-पहुँचते यह नमी बारिश बनकर झूमकर बरसने लगती है। यही तो है हमारा मानसून!

फॉर्म 4 (नियम – 8 देखिए)

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बंध में जानकारी

प्रकाशन का स्थान	भोपाल	सम्पादक का नाम	विनोद रायना
प्रकाशन की अवधि	मासिक	राष्ट्रीयता	भारतीय
प्रकाशक का नाम	विनोद रायना	पता	एकलव्य ई-1/ 25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल – 462 016
राष्ट्रीयता	भारतीय	उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है	रेक्स डी. रोज़ारियो भारतीय एकलव्य ई-1/ 25 अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016
पता	एकलव्य ई-1/ 25,अरेरा कॉलोनी, भोपाल – 462 016		
मुद्रक का नाम	विनोद रायना		
राष्ट्रीयता	भारतीय		
पता	एकलव्य ई-1/ 25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल – 462 016		

मैं विनोद रायना यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

1 जुलाई, 1998

विनोद रायना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

मेरा पन्ना

चालाक कौवा

दो चिड़ियाँ रहती थीं। एक का नाम था आरती और एक का नाम पारबती था। दोनों में बहुत गाढ़ी दोस्ती थी। वो दोनों नदी के किनारे बैठी-बैठी बातें करती रहती थीं। उसी नदी के किनारे एक कौवा रहता था। वो सोचता था कि उससे भी कोई दोस्ती करे। मगर उससे कोई दोस्ती नहीं करता था। क्योंकि वह हमेशा गंदे काम करता था और मार खाता था। इसलिए उससे कोई दोस्ती नहीं करता था। वह कौवा अब उन दोनों चिड़ियों के पास पहुँचा। और कहने लगा, ''मैं तुमसे दोस्ती करूँगा।'' आरती और पारबती ने मान लिया।

कुछ दिनों बाद कौवा उन्हें ऊँट के खेत में ले गया। आरती और पारबती से कहने लगा, ''यह खेत मेरा है, मैं रोज़ यहाँ आता हूँ और तरबूज खाता हूँ।''

आरती और पारबती के मुँह में पानी आ गया। वे भी तरबूज खाने लगीं। ऊँट ने देखा कि दो चिड़ियाँ मेरे खेत में तरबूज खा रही हैं। तो ऊँट आया और कहने लगा, ''तुम लोग मेरे खेत का तरबूज क्यों खा रही हो?''

आरती ने कहा, ''यह खेत तो कौवे का है। वह हमारा दोस्त है।''

ऊँट ने पूछा, ''वह कौवा कहाँ है?''

आरती ने कहा, ''वह आम के पेड़ पर आम खा रहा है।'' ऊँट जब वहाँ पहुँचा तो उससे पहले ही कौवा वहाँ से भाग गया था। ऊँट ने देखा वहाँ कौवा नहीं है तो ऊँट को क्रोध आ गया। उसने दोनों सहेलियों को बहुत मारा। तब वे कौवे से दोस्ती नहीं करतीं। कौवे से कोई भी दोस्ती नहीं करता।

कुलवेन्द्रसिंह पिछोरे, चौथी, पांडुतला, बालाघाट, म. प्र.

प्रश्न का हल

बुधवार का दिन था। हमारे दोस्त की घड़ी में चार बजे थे। और भोपाल से एक औरत चकमक लेकर आई थी। उनमें से हमने दो कहानियाँ पढ़ीं। और बाद में तीन प्रश्न पूछे। दो प्रश्नों का जल्दी हल खोज निकाला था परन्तु एक सवाल ऐसा था– चार वर्ग बनाए और उनने सबसे कहा कि इसकी दो भुजा हटाकर ऐसी जगह लगाओ कि सात वर्ग प्राप्त हो जाएँ। किसी से भी यह प्रश्न हल नहीं हुआ। मैं एक बार खड़ा होकर बैठ गया। फिर उठकर दिमाग से उस प्रश्न का हल खोज निकाला।

मधादास स्वामी, बारह वर्ष, पूगल, बीकानेर, राजस्थान

मनाली राजपाल, पहली, उदयपुर, राजस्थान

चिड़िया और उसकी माँ

अमित मालवीय, सतवास, देवास, म. प्र.

एक बहुत बड़ा घना जंगल था। उस घने जंगल में एक बहुत बड़ा पेड़ था। वह पेड़ जंगल के बीचोंबीच था। उसके पूरे चारों तरफ हरियाली ही हरियाली थी। उस पेड़ की सबसे ऊपर वाली टहनी पर चिड़िया का घोंसला था। एक दिन चिड़िया का अण्डा हो गया। उससे एक चिड़िया का बच्चा हो गया। उसकी माँ उसके लिए हल्का-फुल्का खाना लाई। और उस बच्चे ने खाना देखकर मुँह खोल दिया। चिड़िया ने उसके मुँह में खाना डाल दिया। और दिन बीतते गए वह बच्चा बड़ा हो गया।

एक दिन वह अपनी माँ के लिए खाना लेने गया। उसे एक छोटी पहाड़ी दिखी। वह वहाँ चला गया। उसे मालूम नहीं था कि वहाँ पर बाज का घर है। बाज उसके पीछे लग गया। चिड़िया ऊपर, बाज भी ऊपर। चिड़िया का घर आने ही वाला था कि अचानक बाज एक एरोप्लेन से टकरा गया और मर गया। चिड़िया का बच्चा घर आ गया। उसने अपनी माँ को पूरी कहानी सुना दी। सब अब बहुत खुश थे।

नाम पता कुछ नहीं लिखा है।

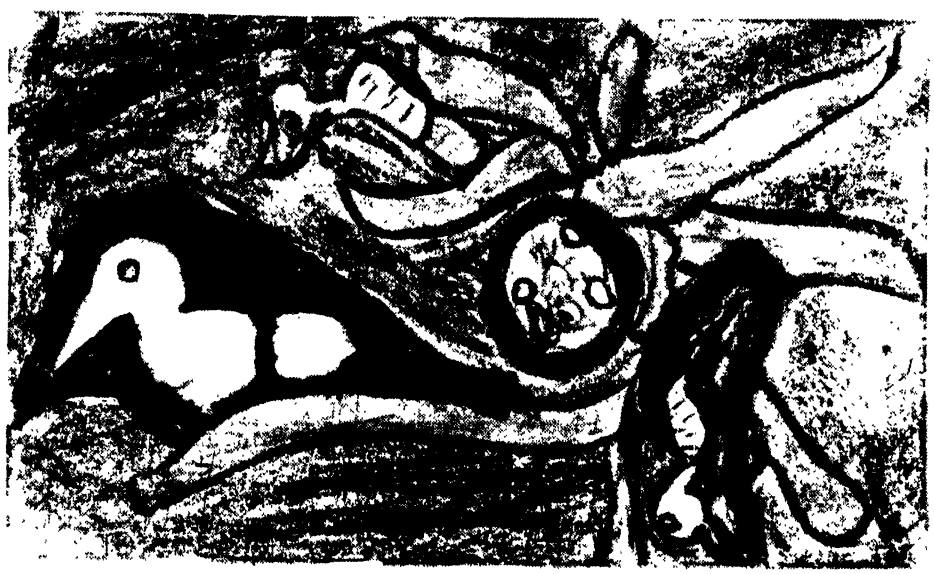

सुनयना सिंह, उ.प्र.

मेरा पन्ना

घोड़ा

टिप टिप करता घोड़ा आया
सब लोगों ने शोर मचाया
भालू भी आया, हाथी भी आया
टिप टिप करता घोड़ा आया

तेज़ चाल से चलता हुआ
जब घोड़ा हवा में लहराया
सबको बहुत आनन्द आया
टिप टिप करता घोड़ा आया

शिवरामकृष्ण वाघ, छठवीं, सरदारपुरा उज्जैन, म. प्र.

कमल, पाँचवीं, सतवास, देवास, म. प्र.

किस्सा नटखट चिन्नी का

चिन्नी नटखट दस वर्ष की एक लड़की का नाम है। चिन्नी बहुत ही मस्तीखोर व उधमी लड़की है। इसलिए कुछ लोग चिन्नी को शैतान की नानी कहकर पुकारते हैं। यूँ तो चिन्नी के कई किस्से हैं। पर एक दिन नानी ने चिन्नी को पाँच रुपए दिए और कहा जा बाज़ार से कोई फल खाने को ले आ। चिन्नी फल तो ले आई पर उसने वह फल नानी को दिखाया नहीं कि वह क्या फल लाई है। उसने नानी के सामने एक शर्त रखी कि आप पहले बताइए कि अन्दरवाला हिस्सा लेंगी या बाहरवाला। नानी ने सोचा फल के अन्दर गिरी होती है, बाहर सिर्फ छिलके होते है। और नानी ने ये सोचकर अन्दरवाला हिस्सा देने को कहा। पर नानी को क्या मालूम कि चिन्नी बेर लाई थी। नानी के हिस्से में गुठलियाँ आईं। इस घटना के बाद नानी ने चिन्नी को पाँच रुपए और दिए और कहा कि जा बाज़ार से कोई और फल ले आ। इस बार तो सारे बेर तू खा गई। मेरे हिस्से कुछ न आया। चिन्नी फल लेकर आई। उसने पहले की तरह नानी से पूछा कि नानी आप अन्दरवाला हिस्सा लेंगी या बाहरवाला। इस बार नानी ने बाहरवाला हिस्सा माँगा। पर अफसोस चिन्नी इस बार नारियल लाई थी और नानी के हिस्से में नारियल के छिलके आए।

आशीष महाजन, खरगोन, म. प्र.

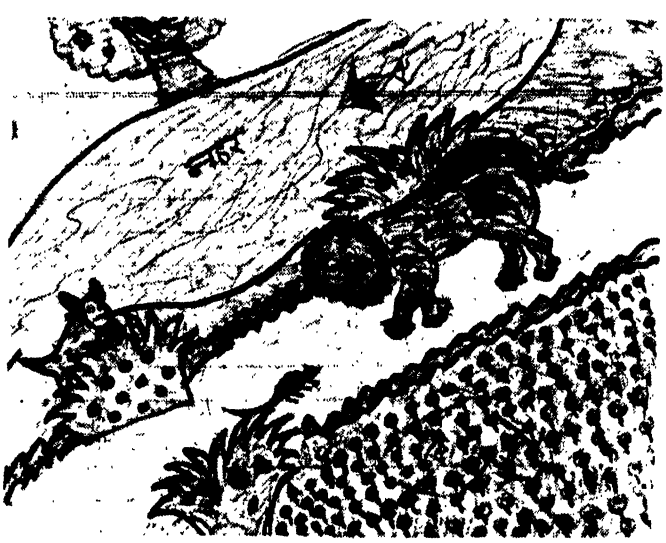

सतीश चौहान, आठवीं, पिपली बाज़ार, टोंकखुर्द, देवास, म. प्र.

शेर और लोमड़ी

एक बार की बात है कि एक शेर लोमड़ी के पास गया और माफी माँगने लगा। और वो लोमड़ी से कहने लगा कि मुझे थोड़ा सा सोना दे दो। लोमड़ी ने सोना देने से मना कर दिया। तब शेर चीखने लगा। उसे सिपाही पकड़कर ले गए और उसको पिंजड़े में बन्द कर दिया।

कमलदीप सिंह, पहली, टीकमगढ़, म. प्र.

छिंद रस पिया

गर्मी *के दिन में मैं और मेरा भाई मनोज महुआ बीनने जाते थे। एक दिन कि बात है महुआ बीनते-बीनते दो बज गए। जाते समय हमें बहुत जोरों की प्यास लगी, पास में कहीं भी पानी नहीं था। कुछ दूर चलने पर हमें एक छिंद पेड़ दिखाई दिया। छिंद पेड़ के ऊपर एक छोटा-सा मटका लटका था। मैंने उस छिंद पेड़ पर चढ़कर मटके में भरा छिंद रस निकालकर अपने पानी के डिब्बे में भर लिया और उसे एक पेड़ की छाया के नीचे पीने लगे। छिंद रस मीठा था इसलिए हम आधा से ज्यादा पी लिए। घर पहुँचते-पहुँचते हमें नशा आ गया। मैं घर के गेट के पास धड़ाम-से गिर पड़ा। जब मैं उठा तो अपने आप को बिस्तर में पाया।*

धुनेश्वर शोरी, चौदह वर्ष, छोटेडोंगर, नारायणपुर, बस्तर, म. प्र.

हिरणखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.

अंक कितने मिलेंगे

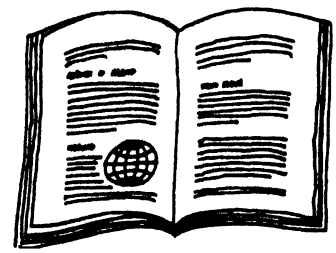

काबलियत के बीज बो चुके,
ना जाने किस रंग के फूल खिलेंगे।
मेहनत तो अच्छी की है मगर,
क्या पता अंक कितने मिलेंगे।

रात भर नहीं सोए,
सभी प्यारे-प्यारे सपने खोए।
पढ़-पढ़कर घोंट दी पुस्तक,
प्रश्नों के फूल चढ़ाए परीक्षा के मस्तक।

पुस्तक पर मोती तो बिखेर दिए,
किसे पता वो कितने फलेंगे।
मेहनत तो अच्छी की मगर,
क्या पता अंक कितने मिलेंगे।

अभिषेक सोलंकी, सतवास, देवास, म. प्र.

नाम पता नहीं लिखा।

माथापच्ची

(1)

दस पत्थर या पत्तियाँ या कंचे या फूल, कुछ भी लेकर इस तरह से एक लाइन में जमाओ। बस बात इतनी ही है कि वे दस होना चाहिए। अब इनमें से किसी भी एक फूल को उठाकर दाएँ या बाएँ के दो फूलों पर से कुदाकर तीसरे के पास रख दो। यह जम गई इनकी जोड़ी। अब किसी और फूल को उठाकर उसी तरह उसकी भी जोड़ी जमाओ। जब पहले से जमी किसी जोड़ी पर से कूदो तो उसे एक ही गिनना। इस तरह तुम्हें सभी फूलों को दाएँ या बाएँ ले जाकर फूलों की 5 जोड़ियाँ बनानी हैं। देखो क्या तुम बना पाते हो?

(2)

2 और 3 के बीच में गणित का एक ऐसा चिह्न लगाओ कि नतीजे में जो संख्या मिले वह 2 से बड़ी हो और 3 से छोटी।

(3)

ये दो गोल-मटोल भारी भरकम हाथी हैं तो बिल्कुल एक-से, पर इनको बनाते-बनाते कुछ फ़र्क भी छूट गए हैं। क्या तुम कम-से-कम 5 ऐसे फ़र्क ढूँढ सकते हो?

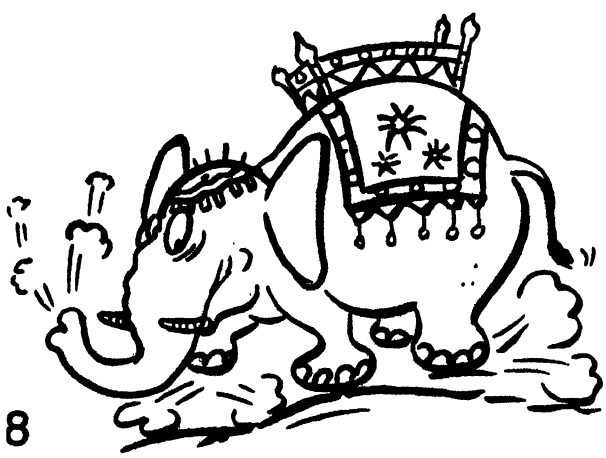

(4)

यह एक समुद्री जीव है – समुद्री शेर या सील। इसमें जहाँ **अन्दर'** लिखा है वहाँ से अन्दर घुसकर जहाँ **'बाहर'** लिखा है वहाँ से बाहर निकलना है। लेकिन सील बड़ी पेचीदा है। देखना कहीं अन्दर घुसकर अन्दर ही फँस न जाना।

(5)

एक आदमी महीने की पहली तारीख को यह फैसला करता है कि वह उस दिन एक रुपया गुल्लक में डालेगा, अगले दिन दो रुपए डालेगा, तीसरे दिन 4 रुपए . . . . । इसी तरह वह कम-से-कम पन्द्रह दिन तक पैसे जमा करेगा। हर दिन वह पिछले दिन से दुगुने रुपए गुल्लक में डाला करेगा। पर दसवाँ दिन आते-आते ही उसकी हालत पतली हो गई। गुल्लक में डालने लायक नौवें दिन से दुगुने रुपए उसकी जेब में बचे ही नहीं। क्या तुम अन्दाज़ से झट से बता सकते हो कि उस दिन कितने रुपए डालने थे उसे? और अगर वह यह सिलसिला 15 दिन तक चलाता तो कितने रुपए जमा हो जाते उसके पास?

(6)

गर्मी की छुट्टियों में ललिता टेलीफोन बना रही थी। उसने माँ से धागा माँगा तो माँ ने कहा, " कल ही तो मैंने तुम्हें बचे हुए ऊन का गोला दिया था। आज और धागा किसलिए चाहिए?"

ललिता ने रुआँसे होकर कहा, " उसमें से आधा तो भैया ने ले लिया था। और बाकी बचे में से भी आधा बाबू ने मेरी फटी कॉपी सिलने में लगा दिया था। फिर बचे का आधा दीदी ने ले लिया, अपनी गुड़िया की चोटी बाँधने के लिए। और जो बचा वह तो सिर्फ़ आधा मीटर है। उससे टेलीफोन बन सकता है क्या?"

अब तुम बताओ शुरू में ललिता के पास कितना लम्बा ऊन था?

(7)

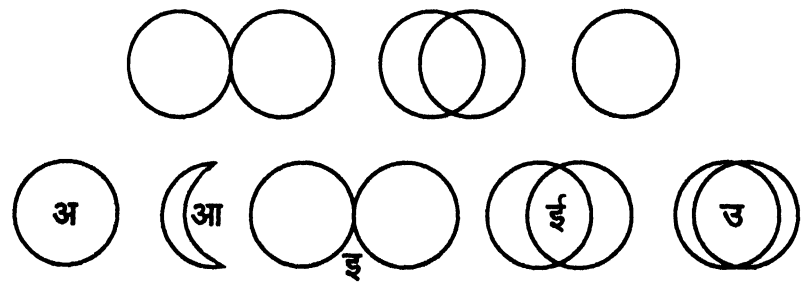

ऊपर की लाइन के हर चित्र में दो गोले हैं। एक निश्चित क्रम के हिसाब से इनकी स्थिति आपस में बदल रही है। उस क्रम को पहचानकर क्या तुम बता सकते हो कि अगली दो स्थितियाँ क्या होंगी? नीचे की लाइन के चित्रों में से ढूँढ सकते हो ये स्थितियाँ।

दादा पोतों का खेल

डॉलफिन प्रकाशन, पेइथिंग की किताब 'बालकार्टून – पुल पार करना' से साभार।

माथापच्ची: हल जून, 98 अंक के

2. 6 गेंद

4. 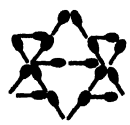

5. 55 + 5 / 5 = 56

6. लगभग 113 किलो 600 ग्राम।

7. नीलू ने गुलाबी फ्रॉक पहनी है, श्वेता ने नीली और गुलाबो ने सफेद।

8.

भूलचूक

पिछले अंक के सवाल नं. 3 में दोनों ढेरियों के आलू की कुल संख्या गलती से 556 छप गई थी। यह संख्या 559 होनी चाहिए। इस हिसाब से छोटी ढेरी में 258 आलू होंगे और बड़ी ढेरी में 301 आलू।

वर्ग पहेली – 82 का हल

पु	■	प	र	ख	■	वि	स्ता	र
ला	■	व	■	चा	ला	न	■	■
व	ज	न	■	ख	■	ती	मा	र
■	मी	■	■	च	■	■	■	ज
ति	र	स्का	र	■	आ	ना	का	नी
ल	■	■	■	मे	■	■	फि	■
क	ठौ	ता	■	ह	■	ग	री	बी
■	■	प	थे	रा	■	ठ	■	ह
खा	लि	स	■	ब	ज	री	■	ड़

वर्ग पहेली 82 का सही हल भेजने वाले पाठक हैं रविकान्त मित्तल, ब्यावरा (राजगढ़); चन्द्रप्रकाश मरकाम व राजकुमार मरकाम, सावंतपुर, बिलासपुर; शिवेन्द्र कुमार दुबे, लिंगा, बालाघाट; व नेहा सिंगारे, सारणी, बैतूल। सभी म.प्र.। इन्हें चकमक का जुलाई 1998 अंक उपहार में भेजा जा रहा है।

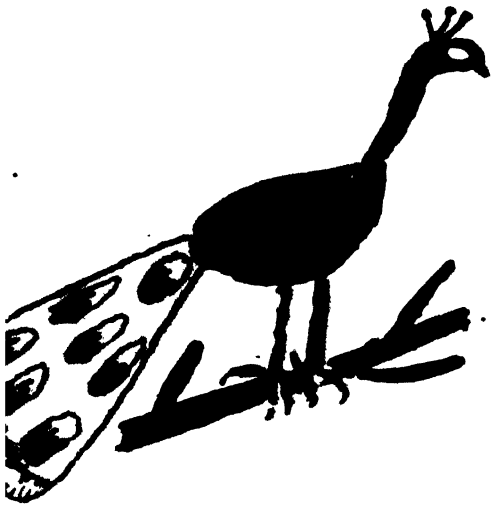

ललित उपाध्याय, रहली, सागर, म.प्र.

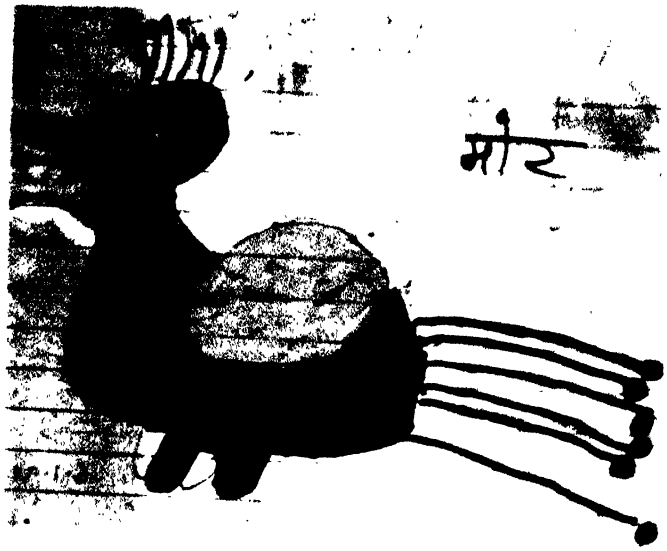

चित्रा कुशवाह, (उम्र व पता नहीं लिखा)

महेन्द्र कुमार वैष्णव, सातवीं, मकेरड़ा, अजमेर, राजस्थान

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अन्तर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/98

ललित कुमार मेहता, नौवीं, भावनगर, गुजरात

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना